



CARMEL COLLEGE, MALA

Nationally Re-accredited with 'A' grade (Third Cycle)

Thrissur Dt., Kerala- 680732, Ph:04802890247, Fax: 04802890247

E-mail: carmelcollege@rediffmail.com, Website: www.carmelcollegemala.ac.in



Criteria III

Research, Innovations and Extension

3.3.3 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

Details of Publication (Books and Chapters)

Submitted to



THE NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

SVASH 2016

ISSN No. 1547-1032/2016

Proceedings of the Third
International Seminar of
Swami Vivekananda Association
of Science & Humanities 2016

VOLUME - I- LANGUAGES



ISBN 978-81-928007-45



Editor - Dr. M. Jaya Prakash

വത്തിന് കൈറാറ്സ്- ഒരു പുനർനായന

Biney Dominic, Research scholar
SreeSankaracharya Sanskrit University



വിലാസംവിലാസത്തിൽ സ്വന്തമായ ഇടം കൈവരിച്ചിട്ടുള്ള വത്തിന് കൈറാറ്സിന്റെ പുനർനായന എന്ന വിഷയത്തെപ്പറ്റി എം. പി. റാമൻ എഴുതിയ ഒരു ലേഖനം അദ്ദേഹം വിവർത്തനം ചെയ്യുന്നത്. 1750-1802 കാലഘട്ടത്തിലെ ഇറ്റാലിയൻ പണ്ഡിതന്മാരിൽ വെല്ലുഴിഞ്ഞ പുനർനായന എന്ന ആശയം അദ്ദേഹം വിവരിച്ചിട്ടുള്ളതാണ്. ഈ പുനർനായന എന്ന ആശയം സാഹിത്യത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നില്ലെങ്കിലും അത് അക്കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നില്ലെങ്കിലും അത് അക്കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു.

പുനർനായന എന്ന ആശയം ഇറ്റാലിയൻ പണ്ഡിതന്മാരിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു.

തീവ്രവും അനിയന്ത്രിതവുമായ പ്രണയത്തെയും അതിന്റെ നിർദ്ദയതയെയും സമൂഹീകരണവും ചിത്രണം കൊണ്ട് നോവലിൽ ആവിഷ്കരിച്ചിരിക്കുന്നു. സെക്സോ വമ്പലന്റോ ഇല്ലാതിരുന്നിട്ടും കൂടി ചെറുകുട്ടിയെ വെട്ടിക്കൊന്നിച്ച് വികസിപ്പിച്ചിട്ടുള്ള നായനക്കാരൻ ചെറുകുട്ടിയെ കണ്ടെത്തിയപ്പോൾ ഈ കൃതി 'ലോലിപ്പ' പ്രണയം, വിഭവനായ ചെറുകുട്ടിയെ അന്വയിച്ചു. നായനക്കാരൻ കണ്ടെത്തിയപ്പോൾ ഈ കൃതി 'ലോലിപ്പ' പ്രണയം, വിഭവനായ ചെറുകുട്ടിയെ അന്വയിച്ചു.

നായനക്കാരൻ കണ്ടെത്തിയപ്പോൾ ഈ കൃതി 'ലോലിപ്പ' പ്രണയം, വിഭവനായ ചെറുകുട്ടിയെ അന്വയിച്ചു. നായനക്കാരൻ കണ്ടെത്തിയപ്പോൾ ഈ കൃതി 'ലോലിപ്പ' പ്രണയം, വിഭവനായ ചെറുകുട്ടിയെ അന്വയിച്ചു.

വിവർത്തനത്തിന്റെ സാധ്യതകളെ വേണ്ടത്ര പ്രയോജനപ്പെടുത്തിക്കൊണ്ടാണ് എം. പി. റാമൻ വത്തിന് കൈറാറ്സിന്റെ വിവർത്തനത്തിലേർപ്പെടുന്നത്. പുനർനായന എന്ന ആശയം ഇറ്റാലിയൻ പണ്ഡിതന്മാരിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു.

പുനർനായന എന്ന ആശയം ഇറ്റാലിയൻ പണ്ഡിതന്മാരിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു. ഈ കാലഘട്ടത്തിൽ ഉണ്ടായിരുന്നു.

കാഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്.

കാഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്.

Cathy kissed me carefully anxious not to disarrange her hair and then she looked around the room for Heathcliff."

"Cathy raced towards her old friend and covered him with kisses just like she used to do but then she stopped and drew back in surprise, laughing out loud. "I'd forgotten how black and cross you look. Heath Cliff, and how funny and grim! But that's because I'm used to Edgar and Isabella, with their pretty golden hair.

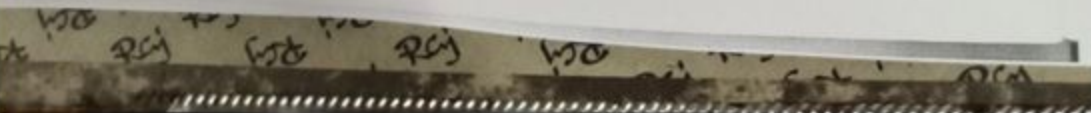
Heath cliff stood silent and still as a stone."

കാഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്.

കാഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്. കഥയുടെ ആദ്യ ഭാഗം വായിക്കുന്നതിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ ശ്രദ്ധിക്കേണ്ടതാണ്.

സംഗ്രഹം, പ്രസ്താവന

1. മിസ് ഡബ്ലിൺ. 2003. *Wuthering Heights*, London: Usborne Publishing House.
2. റോബർട്ട് എ. ഡബ്ലിൺ. 2003. *Wuthering Heights*, London: Usborne Publishing House.
3. ഡബ്ലിൺ. 2003. *Wuthering Heights*, London: Usborne Publishing House.
4. Venuti, Lawrence. 2000, *The Translation Studies Reader*, London: Routledge.





भारतीय साहित्य : अद्यतन प्रवृत्तियाँ

सं. डॉ. आर. सेतुनाथ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुदान प्राप्त

ISBN : 978-81-8111-363-4

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी

जवाहर पुस्तकालय

हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक,

सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ. प्र.)

दूरभाष : 09897000951

ई-मेल: jawahar.pustakalaya@gmail.com

मूल्य : ₹ 300.00

प्रथम संस्करण : 2016

आवरण : गोविन्द पचौरी

शब्द-संयोजन : शालू कम्प्यूटेर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन नं. 09313588569

मुद्रक : जय भारत प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032



से कटे हुए मानव की विस्थिति	डॉ. इंदु वेलसार	149
दलित कविता : एक पहचान	डॉ. मंजुला के.	157
ग्रामीणता और पारिस्थितिक विमर्श	डॉ. वी.के.सुब्रमण्यम	166
'राधा की परिकल्पना : भारतीय साहित्य में	डॉ. माया पी.	174
समकालीन हिन्दी कहानियों में संतान सत्ता और वृद्धजनों की अस्मिता की अभिव्यक्ति	डॉ. राधामणि सी.	181
गिरीशकान्नाड का नाटक साहित्य और हयवदन	डॉ.नामदेव एम. गौडा	189
रूपनारायण सोनकर के नाटक 'एक दलित डिप्टी कलेक्टर' में चित्रित दलित जीवन पर्यावरण : के. जी शंकरपिल्लै की कविताओं में	डॉ. शरशाद खान एम	206
कन्नड लोक परंपरा और लोरी साहित्य	श्रीकला टी. के.	209
मलयालम उपन्यास ऊर्मिला : एक अध्ययन	शकुंतला एस. पाटिल	215
मलयालम दलित कहानीकार टी. के. सी वटुतला	डॉ. संगीता पी.	225
'एनमकजे प्रदत्त पर्यावरण सुरक्षा पाठ'	डॉ. शैलजा वाडी	229
21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में पुरुष विमर्श	डॉ. नरमदा पी.	234
'ओलिप्रम कटवु' और 'किसके पक्ष में'—स्त्री चिन्तन और बदलते दाम्पत्य संबंध की कहानियाँ	मोहन सिंह	238
दलित आलोचना : हिन्दी आलोचना की अद्यतन प्रवृत्ति	डॉ. षिबी सी	244
बंगला साहित्य में भारतीय मूल्य	मणिकंठन सी.सी.	248
'ग्लोबल गाँव के देवता' : वैश्वीकृत समाज का प्रतिनिधि उपन्यास	प्रो. ईप्शिना चन्दा	253
	डॉ. आर. सेतुनाथ	267

‘ओलिप्रम कटवु’ और ‘किसके पक्ष में’—स्त्री चिन्तन और बदलते दाम्पत्य संबंध की कहानियाँ

—डॉ. शिवी सी

समकालीन साहित्य में मानवीय संबंधों के अंतर्द्वंद्वों का चित्रण करने की ओर साहित्यकारों ने विशेष ध्यान दिया है। कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत द्वंद्वों का मार्मिकता के साथ करने का सफल प्रयास मलयालम तथा हिन्दी के कहानीकारों ने किया है। इस दृष्टि से मलयालम की कहानी लेखिका रेखा और हिन्दी की प्रख्यात महिला कहानीकार राजी सेठ की रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं।

राजी सेठ की कहानी ‘किसके पक्ष में’ वह अपने समूचे रचनाओं की तरह, पुरुष विरोधी आधुनिक स्त्री की तरह न तो स्त्री होने से इनकार करती हैं और न उसे नष्ट कर देती हैं। नैसर्गिक रूप से उसकी शक्ति और संभावना को चित्रित किया गया है।

वेला और विक्की के बीच तलाक होती है। एक दिन वेला अपने पति को छोड़कर घर से चली जाती है। विक्की का मित्र और वेला को समझने वाले जयन्त इन दोनों के बीच एक ऐसी जगह है, जो दोनों के लिए मध्यवर्ती की भूमिका निभाता है। वेला और विक्की के बीच में पड़कर संकटग्रस्त जयन्त को इन्दौर की ओर ट्रांसफर हो जाता है, जिससे जयन्त विशेष शांति एवं सुख की स्थिति महसूस करता है। इस बीच विक्की और बेटी नीरू को छोड़कर वेला घर से बिना किसी संकटग्रस्त चली जाती है। विक्की जयन्त से अनुरोध करता है कि वेला से बात करें और उसे वापस बुलायें। लेकिन जयन्त को यह समझ में नहीं आता है कि किसके पक्ष में रहें। वह स्वयं वेला के निर्णयों पर दखल नहीं देना चाहता। समाज

की अदृश्य निष्ठा के नाम पर अपनी को अक्षुण्ण रखने को कैसे कहा जाए? अन्त में तलाक होती है तो नीरू को लेकर उस समय तक विक्की को जो आशंका थी, धीरे-धीरे फीका पड़ने लगता और वह दूसरी शादी के लिए तैयार हो जाता है। यह जानकर वेला जयन्त से अनुरोध करती है कि विक्की से वह कहे कि नीरू थोड़ी और बड़ी हो जाए तब वह विक्की दूसरी शादी न करें। लेकिन जयन्त यह अनुरोध नहीं स्वीकार पा रहा है और विक्की के हित में कार्य करने के लिए तैयार है।

‘ओलिप्रम कटवु’ कहानी में कहानीकार ने मुरलीकृष्णन और तारा के दाम्पत्य जीवन के माध्यम से किसके पक्ष में से थोड़ा अलग होकर सोचने को हमें बाध्य कर दिया है। इस कहानी में पुरुष वर्चस्व का चित्रण है। स्त्री को हमेशा शंकाकुल दृष्टि से देखने वाले समाज का चित्रण मुरलीकृष्णन के माध्यम से किया है। मुरलीकृष्णन अपनी पत्नी तारा से बेहद प्यार करता है और उनकी निष्कलंक बर्तावों में अपने कां स्वस्थ पाता हूँ लेकिन जब तारा मुरलीकृष्णन से अनुमति लेकर शोध करने के लिए चली जाती है तो स्थिति धीरे-धीरे बदलने लगती है। लोग तारा को बुरी दृष्टि से देखने लगते हैं और तारा के बारे में अपवाद भी कहने लगते हैं। थोड़ा कुछ तो मुरलीकृष्णन के कानों में भी आ पहुँचता है और अपने दोस्तों की सभा में इस पर चर्चाएँ भी होती हैं। ऐसी चर्चाओं के बारे में जानकर मुरलीकृष्णन को वेदना होती है आखिर अपनी माँ के मुँह से वही बातें सुनकर वेदना अपनी चरम सीमा पर पहुँचती है। अंत में वह खुद तारा के विश्वविद्यालय जाकर उसे छोड़ देने की बात सोचता है और अपने मन को तैयार कर देता है। जब वह तारा के होस्टल पहुँचता है तो मालूम हो जाता है कि वह किसी लड़के के साथ ‘ओलिप्रम कटवु’—(ओलिप्रम कटवु केरल के जिला मलपुरम की एक जगह विशेष के पास एक सुन्दर जगह) गई हुई है। यह सुनकर उनका क्रोध और भी बढ़ जाता है। उसका भाव देखकर पहरेदार कहता है कि तारा से नाराज न हो, वह अच्छी लड़की है। जब तारा वापस आ जाती है तो कहानी का पूरा ढाँचा ही बदल जाता है। तारा कहती है कि आज मुरली का जन्मदिन होने के कारण ओलिप्रम कटवु के मन्दिर गई थी। रात होने के डर से श्रीनी को भी साथ लेकर गई थी। यह सुनकर मुरली थोड़ा शान्त हो जाता है और क्रोध का सम्पूर्ण शमन तब होता है जब तारा कहती है कि वह शोध पूरा करके तुरन्त वापस आना चाहती है और माँ बनना चाहती है। तब मुरली सोचने लगता है कि अब मेरा शेष जीवन इसके साथ ही बिताना चाहिए। तारा से उसका प्यार और भी बढ़ जाता है।

इन दोनों कहानियों के माध्यम से कहानीकार दाम्पत्य और स्त्री जीवन के

‘ओलिप्रम कटवु’ और ‘किसके पक्ष में’—स्त्री चिन्तन.... / 245

विभिन्न परिदृश्यों को नये रूप में हमारे सम्मुख रखते हैं, जो साम्य-वैषम्य से भरपूर हैं।

स्त्री के दो जीवन पक्ष

बेला अपने आपको उन्मुक्त मानती है। वह सोचती है कि ताकतवर हो जाना केवल पुरुष का ही बपौती नहीं है। दाम्पत्य की अनिवार्य गिलगिली दासता को समाप्त करने को वह तैयार है। बेला परंपरा और पारिवारिक संबंधों की खेमे में नहीं जीना चाहती। वह जानती है कि जब स्त्री कुछ हटकर सोचती है तो मान-सम्मान, यश-अपयश की चिन्ता होने लगती है, जिसकी वह सख्त विरोधी है। 'बनी बनाई हुई इमेज' पर बेला का विश्वास नहीं है।

तारा अपने को पारिवारिक और दुनियाई रिश्तों को बरकरार रखते हुए उन्मुक्त रखना चाहती है। वह पुरुष को तोड़ने के लिए उतारू नहीं, बल्कि अपने पति को अपने साथ रखने का प्रयास करती है। वह सबको प्यार और ममता से देखती है। आधुनिक दुनिया के परिवेश में रहकर भी वह अपने अन्दर भारतीय नारी संकल्पना को कायम रखने का प्रयास करती है।

शक्तिहीन पुरुष का प्रतीक

'ओलिप्रम कटव' की मुरली और 'किसके पक्ष में' की विक्की में कई समानताएँ हैं। दोनों के माध्यम से कहानीकारों ने बदलती सांस्कृतिक परिवेश का जिक्र किया है। विक्की और मुरली दोनों, प्रभुतापूर्ण पुरुष हैं, लेकिन उनमें सामाजिक मान्यताओं को तोड़ने की शक्ति और क्षमता नहीं है। दोनों अपने-अपने परंपरागत जीवन शैलियों पर टिके हुए हैं और बनी बनाई इमेज के पक्षधर हैं। समाज के खोखले मर्यादावाद के प्रतिष्ठापकों की तरह दोनों कार्यवाही करते हैं। विक्की को भय है कि अगर लोग यह जान लिया कि बेला उसे छोड़कर चली गई है, तो वह बड़ी अपयश की बात है।

तारा के प्रति अदम्य प्यार रखते हुए मुरली भी भयग्रस्त है कि तारा कहीं उसे छोड़का चली जाय। तारा की बारे में अपवाद सुनकर उसे भी विक्की की तरह मान-सम्मान का भय है। किसी भी हालत में वह तारा को छोड़ना नहीं चाहता और हर क्षण धैर्य सँभालता रहता है। विक्की भी कई बार बेला की वापस आने की प्रतीक्षा करता है। जयन्त को वह निरन्तर बेला से बात करने को विवश भी

कर देते हैं।

मातृत्व-नये संदर्भ में

बेला और तारा मातृत्व के धरातल पर एक जैसे लगते हैं। बेला अपने आपको स्वायत्त बनाने के बाद नीरू को ले जाने के बारे में जयन्त से कहती है कि बेटी बड़ी होने तक पुनर्विवाह न करें। यहाँ आधुनिक स्त्री के अन्दर भी प्रतिष्ठित मातृत्व की माधुर्य का भाव झलकता है। तारा अपनी शोध पूरा करके माँ बनना चाहती है, जो आधुनिक पढ़ी-लिखी औरत की इच्छा है।

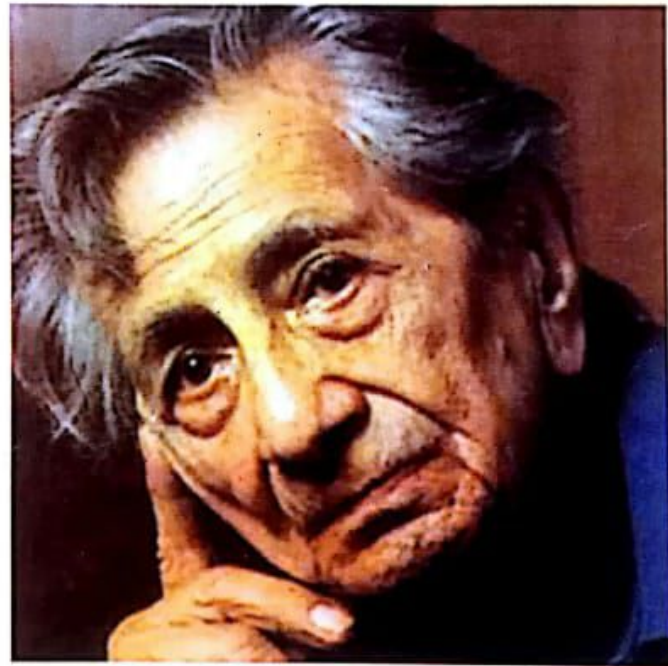
बदलते दाम्पत्य-संबंध

आज के तनावपूर्ण सामाजिक जीवन में दाम्पत्य किस प्रकार बदल रहा है का चित्रण दोनों कहानियों में विद्यमान है। पति और पत्नी के बीच में समझौता की खड़िया फीकी पड़ रहा है। एक-दूसरे को चाहते हुए भी अपने आप को स्वतंत्र मानकर विक्की और बेला के बीच तलाक हो जाती है। विक्की यह मानता है कि वह स्वयं बेसहारा बन गया है। आज तक स्वयं को बेला को समर्पित नहीं किया है—यह जानकर भी पुरुष की प्रभुताभरी स्वर में वह जयन्त से कहता है कि "मैं उसे ब्याहकर लाया था... क्या कोई आदमी अपनी ब्याहता के साथ ऐसा कर सकता है?" इसी तरह दाम्पत्य की एडजेस्टमेंट से बोर होकर बेला कहती है कि "धृणा का भी प्यार की तरह एक बन्धन होता है—नकारात्मक बन्धन।"

विक्की और मुरली पर अतीत का बोझ है। जीवन को नये मौलिक दृष्टि से देखने की शक्ति दोनों में नहीं है जो बेला और तारा में विद्यमान है। बेला अपनी वैवाहिक जीवन को छोड़कर भी अपनी अस्तित्व को बनाए रखती है, तो तारा ऐसा नहीं कर पाती है। सारे बंधनों के बीच में भी वह स्वयं को खोजती रहती है। दोनों कहानियाँ विविध मुद्दों पर मिलते-जुलते लगते हैं।

□

भीष्म साहनी का साहित्य



संपादक
डॉ. प्रमोद कोवप्रत

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से
वित्तीय सहायता प्राप्त

ISBN : 978-81-8111-371-9

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी

जवाहर पुस्तकालय

हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक

सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ.प्र.)

दूरभाष : 09897000951

ई-मेल : jawahar.pustakalaya@gmail.com

मूल्य : 495.00 (चार सौ पचानवे रुपये मात्र)

प्रथम संस्करण : 2017

आवरण : विनीत शर्मा

शब्द-संयोजन : गीता डिजाइनिंग ग्रुप, दिल्ली-110094

मो. : 09350345268, फोन : 011-22813053

मुद्रक : जय भारत प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032



‘चील’ कहानी में स्त्री-पुरुष मानसिकता

—पिबी. सी.

हिन्दी के कहानीकारों में भीष्म साहनी का स्थान अद्वितीय हैं। उनकी एक प्रमुख कहानी है चील। कहानी का प्रारंभ चील का आकाश से नीचे झपट्ट मारते हुए आने की दृश्य से होता है। कहानी कभी दार्शनिक और कभी मानसिक व्यापारों का खेमा बन जाता है। कहानी का मुख्य पात्र ‘मैं’ हूँ। कहानीकार ने विविध जीवन मुद्दों को हमारे सामने रखा हैं। कहानी का वातावरण भारती पार्क बनाया गया है, जहाँ नायक बैठा हुआ है। चील के माध्यम से कहानी विकसित होती है। “चील ने फिर झपट्टा मारा है। ऊपर, आकाश में मण्डरा रही थी, जब सहसा, अर्धवृत्त बनाती हुई तेजी से नीचे उतरी और एक झपट्टे में, मांस के लोथड़े को पंजे में दबोच कर फिर से वैसा ही अर्धवृत्त बनाती हुई ऊपर चली गई।” यही कहानी का पहला दृश्य है।

नायक शाम के समय पार्क में बैठा हुआ था। तब उसे लगता है कि कोड़ दूर चलती जा रही थी, वह शायद उनकी ही पत्नी शोभा है जो उसे छोड़कर चली गयी थी। वह कभी यह न सोचा था कि शोभा उसे छोड़कर चली जायेगी। एक बार एक जानकार कहा था कि “हम आकाश में मण्डराती चीलों को तो देख सकते हैं पर आकाश इन्हीं की भांति वायुमण्डल में मण्डराती उन अदृश्य चीलों को नहीं देख सकते जो वैसे ही नीचे उतर कर झपट्टा मारती हैं, और लहु-लुहान करके या तो वहीं फेंक जाती हैं, या उसके जीवन की दिशा मोड़ देती हैं।” चील जीवन में झपट्टा मारकर आनेवाले विविध घटनाओं का प्रतीक हैं। यह झपट्टा कभी-कभी अदृश्य होकर आती है और जिन्दगी को ही बदल देती हैं।

शोभा के प्रति उनके मन में अब भी वहा प्यार है जो पहले भी था। उसे देखने पर उन्हें लगता है कि शोभा में वही मुस्कान आज भी है, लेकिन थोड़ा दुबली हो गई है। चाल में अभी भी वही कमनीयता है। उसका मन चाहता था कि जाकर उनसे पूछे कि तुम कैसी हो? लेकिन ऐसा न करके वह पेड़ के पीछे छुपता हुआ उनका पीछा करता है। यही आकर कहानी नयी मोड़ लेती है। शोभा

का पीछा करते हुए नायक की मानसिक व्यापार धीरे-धीरे खुलने लगते हैं जो स्त्री-पुरुष मानसिकता के धरातल पर महत्वपूर्ण है। 'कई वर तुम्हारे व्यवहार से मेरी आत्मा-सम्मान खो गयी थी'। स्त्री को व्यक्तित्व का माप-तोल करना कोई आसान काम नहीं है। वह सोचता है कि 'जीवन की यह विडम्बना है कि जहाँ स्त्री से बढ़कर कोई जीव कोमल नहीं होता, वहाँ स्त्री से बढ़कर कोई जीव निष्पूर भी नहीं होता।' लेकिन वह स्वयं को इसका कारण मानता है जो हमेशा कुपित सा बर्ताव किया था।

शादी के पहले दिनों में जब कभी शोभा रूढ़ जाती थी किसी भी तरह खेल-मजाक करके उसे वह मनाते थे। धीरे-धीरे शोभा पर जो आकर्षणता थी घटने लगा था। दोनों के बीच खाई चौड़ी होती गई, फैलती गई। शोभा कहने लगी कि, मुझे इस शादी से क्या मिला। तब वह पूछा कि मैंने कौन सा अपराध किया कि तुम सारा वक्त मुँह फुलाये रहो और मैं सारा वक्त तुम्हारी दिलजोई करता रहूँ। यहाँ स्त्री-पुरुष संबंधों के बीच की एक परम सत्य को कहानीकार प्रस्तुत करता है। वह कहानी के माध्यम से कहते हैं कि स्त्री-पुरुष संबंधों में कुछ भी तो स्पष्ट नहीं होता। भावनाओं के संसार के अपने नियम हैं, या शायद कोई भी नियम नहीं। कहानीकार यह कहना चाहते हैं कि स्त्री और पुरुष के बीच जो संबंध होता है भावनात्मक होता है, जिसे किसी नियम के अनुसार मापना मूर्खता होगी। उसमें आज जो रागात्मकता है वह शायद कल न होगा। यहाँ एक बड़ा सवाल हमारे सम्मुख आता है कि पति और पत्नी जीवन भर एक तीव्रता, गतिशीलता और प्रवाह के साथ प्यार कर सकते हैं? क्या उसके बीच तनाव के कारण प्यार हमेशा के लिए खत्म होता है या कहानीकार इसका वस्तुनिष्ठ उत्तर नहीं दे पाते।

दाम्पत्य जीवन में किन-किन छोटी-छोटी बातों को लेकर तनाव की स्थिति आ जाती है और तलाक हो जाती है। वैवाहिक जीवन के पहली दिनों में जो सहज-सद्भावना होती है, नष्ट हो जाती है, और शोभा की सहज मुस्कान भी। नाक-नकश और अदायें भी अपना जादू खो बैठा था। शोभा को देखते ही मन कहने लगा कि तू बड़ी मूर्ख लगती है। क्या पत्नियाँ भी ऐसे सोचती होंगी? इस पर सोचना पाठक का दायित्व बन जाता है। कई दिन बाद देखने पर शोभा के प्रति नायक के मन में अब भी वही तन्मयतापूर्ण प्यार का सुगन्ध है, जो पहले था। अपनी दृष्टिपथ से शोभा का गायब हो जाने से वह परेशान हो जाता है। और उनके मन में बार-बार यही आवाज आती है कि मैं तुम्हें खो नहीं सकता।

शोभा को दुबली और निस्सहाय देखकर वह स्वयं को धिक्कारने लगते हैं। शोभा अपनी बालों पर लाल रंग का फूल टांकी हुई थी। यहाँ स्त्री और पुरुष मानसिकता का विशद चित्रण करके कहानीकार लिखते हैं कि "स्त्रियाँ मन से

धुंध और बेचैन रहते हुए भी बन-संवर कर रहना ना भूलती। स्त्री मन से व्याकुल भी होगी तो भी साफ सुधरे कपड़े पहने, संवरे-संभले बाल, नख-शिख से दुरुस्त होकर बाहर निकलोगी। जबकि पुरुष, भाग्य की एक ही थपेड़ा खाने पर फूहड़ हो जाता है।" यह ज्यादा विवादपूर्ण मामला है। नायक अब पुनः मिलन की आशा में है। उसे लगाता है कि शोभा भी ऐसी सोचती है। कहानी के माध्यम से यह सवाल उठता है कि क्या आत्म सम्मान की भावना केवल पुरुष का हक है? शोभा का बिना कहकर घर छोड़ने पर वह कहता है कि 'घर में तुम्हें न पाकर मेरे आत्म-सम्मान को धक्का लगा था'। ऐसे सोचने पर भी वह अपनी पत्नी को खोना नहीं चाहता। उसे भय है कि जीवन को समस्यारूपी चील शोभा को अपने पास से उड़ाकर न ले चलें। भय के कारण वह शोभा के पीछे भागते हैं। लेकिन पास पहुँचने के पहले शोभा पार्क के बाहर पहुँच गयी थी।

इस कहानी के माध्यम से स्त्री-पुरुष मानसिकता को आँकने का कार्य किया गया है। चील के झपट्ट से जीवन में अचानक आनेवाले उलझनों का वर्णन है। उनमें से कुछ अदृश्य होते हैं, जिसको हम अपने ही मन से उपजाते हैं। कहानी का मूल ढाँचा मनोवैज्ञानिकता पर आधारित है।

* *



हिन्दी साहित्य और माँ

सम्पादक : डॉ. षिबी सी.

ISBN : 978-81-934201-3-3

- पुस्तक : हिंदी साहित्य और माँ
सम्पादक : डॉ. शिबी सी.
स्वत्वाधिकार : सम्पादक
प्रकाशक : माया प्रकाशन
6A/540, आवास विकास
हंसपुरम् कानपुर-208 021
Mo. : 09451877266, 07618879266
E- mail : mayaprakashankanpur@gmail.com
संस्करण : प्रथम 2017
मूल्य : 400.00
शब्द सज्जा : विष्णु ग्राफिक्स
नौबस्ता, कानपुर
मुद्रक : साक्षी ऑफसेट
यशोदानगर, कानपुर
जिल्दसाज : तवारक अली, पटकापुर, कानपुर

HINDI SAHITYA AUR MAA

Edited by : Dr. Shibi C.

Price : Rs. Four Hundred Only.





माया प्रकाशन

(पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता)

6A/540, II-फ्लोर आवास विकास हंसपुरम्

नौबस्ता, कानपुर-208021

मो० : 07618879266, 09451877266

E-mail : mayaprakashankanpur@gmail.com



Scanned with
CamScanner



समकालीन हिन्दी
नाटक तथा रंगमंच

डॉ. वी. जी. मारग्रेट

ISBN : 978-93-85476-66-2

- पुस्तक
समकालीन हिन्दी नाटक तथा रंगमंच
- संपादिका
डॉ. वी.जी. मारग्रेट
- प्रकाशक
अमन प्रकाशन
104ए/80सी रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.)
मो. : 09839218516, 08090453647
फोन : 0512-2543480 (आफिस)
- संस्करण
प्रथम, सन् 2017
- ©
लेखिकाधीन
- मूल्य
₹ 495.00 मात्र
- शब्द सज्जा
अनुप्रा ग्राफिक्स, बारादेवी, कानपुर
- मुद्रक
साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर

SAMKALEEN HINDI NATAK TATHA RANGMANCH

Edited by Dr. V.G. Margret

Price : Four Hundred Ninty Five Rupees Only



16. असंगत नाटक : कथ्य और शिल्प 117
-डॉ. राधामणि.सी
17. नुक्कड़ नाटक का मसीहा 'सफदर हाशमी' और उनका 'औरत' 128
-डॉ. पी.गीता
18. 'कोर्ट मार्शल' में दलित संवेदना की अभिव्यक्ति 132
-डॉ. प्रमिदा.के
19. 'पोस्टर' नाटक : आदिवासी चेतना के सन्दर्भ में 135
-डॉ. मारग्रेट.वी.जी.
20. समकालीन परिदृश्य : शाहिद अनवर के नाटक 'हमारे समय' में 139
-डॉ. प्रिया.पी.
21. संस्कृति का बाज़ीकरण 'चोर निकल के भागा' में 145
-लानिषा.वी.
22. समकालीन शिक्षा व्यवस्था का विकृत वातावरण : ओम.क्रान्ति क्रान्ति 149
-सुजिता.पी.
23. कलाकार का आत्म संघर्ष-'कालकोठरी' में 154
-हृदया एम.पी.
24. 'जादू का कालीन' : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 158
-दिव्या इ.ए.
25. समकालीन हिन्दी रंगमंच 164
-डॉ. माया.पी
26. समकालीन हिन्दी नाटकों की रचना-दृष्टि और रंगमंचीय दृष्टि 172
-डॉ. जेम्स पॉल
27. रंगमंच पर साहित्य का प्रभाव 178
-डॉ. एन.एम. सण्णी
28. नुक्कड़ रंगमंच तथा हिन्दी के नुक्कड़ नाटक-एक विश्लेषण 185
-डॉ. षिबी.सी
29. दलित नाट्य लेखन और रंगमंच 188
30. हिन्दी दलित नाटक और रंगमंच : दशा और दिशा 193
-डॉ. शरशाद खान.एम.
-डॉ. सुशीला टाकभौरे
31. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया व रंगकर्म 200
-शाली पद्मावती.पी

नुक्कड़ रंगमंच तथा हिन्दी के नुक्कड़ नाटक-एक विश्लेषण

□ डॉ. पिबी.सी

नुक्कड़ रंगमंच की अवधारणा : नाटक और नुक्कड़ नाटक में कई भेद हैं। नाटक से ही विकास और ऊर्जा पाकर नुक्कड़ रंगमंच का प्रादुर्भाव हुआ था। बिलकुल प्रोसीनियम नाटक की तरह नुक्कड़ नाटक का भी एक स्क्रिप्ट होता है। नाटक के रंगमंच में जो कठोरता होती है, वह नुक्कड़ रंगमंच में नहीं। उसमें एक सशक्त आशय होता है, जो बिलकुल सशक्त रूप में नुक्कड़ रंगमंच में उभरता है। यही आशय या विचारधारा ही नुक्कड़ रंगमंच को एक अलग अस्तित्व प्रदान करते हैं। यहाँ विचारधारा को रंगमंच में एक हथियार का रूप-सज्जा देकर प्रस्तुत किया जाता है। इसका कदापि यह अर्थ नहीं है कि रंगमंचीय नाटक कोई दकियानूसी विचार में भरपूर है। फर्क इतना है कि नुक्कड़ रंगमंच में जो ताज़गी और प्रभविष्णुता है वह बिलकुल अपनी विचारधारा के कारण है। नुक्कड़ रंगमंच अपने कथ्य एवं शिल्प में एक विचारधारा को सूक्ष्म रूप से आलोचना करने में बाध्य रहते हैं। इसमें रंगमंच का संपूर्ण संकल्प तो पाया जाता है, साथ ही साथ नुक्कड़ की एक विशेष अहमियत भी विद्यमान है। लेकिन रंगमंचीय नाटकों में यह विशेषता नहीं है। नुक्कड़ की संभावनाओं को इसमें नाटककार इस्तेमाल करते हैं। नुक्कड़ में जो सामग्रियाँ मिलती हैं, नाटक में प्रयोग में लायी जाती हैं। कभी एक कूड़ा कभी एक स्ट्रीट लाइट और कभी एक घड़ी तक नाटक में प्रयुक्त की जाती है। हाथ में एक छड़ी और कागज़ से बनी हुई टोपी पहनकर जब अभिनेता

हिन्दी में दलित नाटक और रंगमंच : दशा और दिशा • 185

नुक्कड़ के रंगमंच में अभिनय करते हैं तो लोग आसानी से यह समझ पाते हैं कि वह एक पुलिस पात्र है। इस तरह नुक्कड़ रंगमंच में लचीलापन दर्शनीय है जो रंगमंचीय नाटक में नहीं के बराबर है। नुक्कड़ रंगमंच में सरलता इसी लचीलेपन के कारण संभव हो जाता है। नुक्कड़ रंगमंच की अहमियत यही सरलता और स्वाभाविकता है। इसलिए नुक्कड़ रंगमंच ज़्यादा उपयोगशील रंगमंच बन जाता है। यह रंगमंचीय नाटक का उत्प्रेरित रूप है जिसमें संवेदनशीलता भी अधिक होती है।

पहले भी कह चुके हैं कि नुक्कड़ रंगमंच हमारे लोकनाट्य रूपों से खूब प्रभावित है। लोक से सम्बन्ध रखने के कारण लोकनाट्य में जनवादी चेतना दर्शनीय है। इसलिए लोकनाट्य से नृत्य, संगीत, अभिनय और वेशभूषा आदि के तत्त्वों को अपनाकर जनवादी ढंग से नुक्कड़ रंगमंच काम करते आये हैं। खुले मंच की अवधारणा को भी नुक्कड़ रंगमंच ने लोकनाट्यों से ही ग्रहण किया था। लोकनाट्यों का प्रभाव मंचीय नाटकों में अक्सर ही पाया जाता है।

नुक्कड़ रंगमंच के लिए एक पाठ होता है। पाठ को विचार-विमर्श के साथ दृश्य में बदलने का प्रयास भी होता है। लेकिन कभी इस पाठ में निरन्तर बदलाव आते हैं, और दृश्य की संभावनायें और भी बढ़ जाती हैं। मसलन सफ़दर के 'मशीन' नामक नाटक में मशीन के लिए एक पाठ ज़रूर है, फिर भी दृश्य में बदलते समय उसकी प्रस्तुति मशीन का चित्र या नकली रूप में नहीं, बल्कि अभिनेता मशीन के पुर्जे बनकर आवाज़ निकालने से होते हैं। यहाँ तक आते-आते पाठ दृश्य में बदलते समय विशेष रूप धारण करते हैं, जो नुक्कड़ रंगमंच का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। यहाँ पर स्थायी रूप से पाठ का होना अनिवार्य नहीं है, जैसे प्रोसीनियम रंगमंच में होता है। एक ही पाठ को लेकर समान दृश्यों की प्रस्तुति प्रोसीनियम थियेटर में होती है। नुक्कड़ रंगमंच में पाठ और दृश्य हर एक प्रस्तुति के बाद थोड़ा परिवर्तन के साथ अगली प्रस्तुति की ओर जाती है। यहाँ पाठ और दृश्य में बदलाव होते हैं, या उसके लिए अवकाश मिलते हैं। हर एक प्रस्तुति के बाद विना कथ्य परिवर्तन के साथ सुधार होते रहते हैं।

नुक्कड़ रंगमंच की इन सारी विशेषताओं के कारण नुक्कड़ रंगमंच का प्रयोग वही कर सकता है, जिनमें नाटक करने की भली-भाँति जानकारी हो। नाटक को नुक्कड़ में प्रस्तुत करने से नुक्कड़ नाटक नहीं बनते। नाटक के विशेषज्ञ ही नुक्कड़ रंगमंच की अहमियत को समझ सकते हैं और उसकी संभावनाओं का सही प्रयोग कर सकते हैं। विचारधारा को दृश्य में बदलना आसान

काम नहीं है। विचारों के अनुकूल प्रभावी दृश्यों का आयोजन करना पड़ता है, गीत, संवाद, भाषा आदि में प्रभविष्णुता का होना ज़रूरी है। नाटक की शुरुआत कैसे हो, अंत कैसे हो जैसी बातें पहले से ही सुनिश्चित रहती हैं। स्क्रिप्ट न होने पर भी नाटक की प्रस्तुति प्रभावी रूप में होती है।

नुक्कड़ रंगमंच में नाटककार से लेकर अभिनेता तक को अपने मनोधर्म के अनुसार नाटक के लिए बिलकुल अनुकूल रूप में काम करने की सुविधा मिलती है। नुक्कड़ की जो परिस्थिति है उसके अनुसार अपने मनोधर्म से प्रस्तुति करना इसमें संभव है। नुक्कड़ रंगमंच एक सामूहिक कार्यवाही की उपज है। इस तरह के विविध भाव और कल्पना से नुक्कड़ रंगमंच का निर्माण हुआ है, जिसकी संभावनायें अपार हैं। रंगमंचीय नाटक की तरह एक पाठ को लेकर दृश्य प्रस्तुति तक की संपूर्ण कार्यक्रम को हम नुक्कड़ रंगमंच कह सकते हैं।



**अमन
प्रकाशन**

104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)
फोन : 0512-2543480, (फैक्स) 0512-2543480
मो. : 08090453647, 09839218516
ईमेल : amanprakashan0512@gmail.com
वेबसाइट : www.amanprakashan.com

₹ 495/-

ISBN : 978-93-85476-66-2



9 789385 476662 >



Scanned with
CamScanner

Matiz

Flottila of Colours

EDITORS

MS. JULIE DOMINIC A
Dr. ESTHER MANI
MS. SILPA S ANAND
SR. DANI C FRANCIS

MATIZ, the collection of research papers weave the tapestry of colour around us. It is an expression of the reality of the mind. The cultural, symbolic, social, physical, philosophical and psychological questions and practices are loaded into term 'colour'. The visual world as we see it, is of universal identities, linked to colour. This combination of eliminativism – the view that physical objects do not have colours, and subjectivism – the view that colour is a subjective quality put forward by S K Palmer, a psychologist and cognitive scientist add to the prism of colours. Colour representations has seen humanity travel beyond the "seen", drishyam, kazhcha, spectacle towards metaphorical suspension of reality/ belief. Contemplation on hues is an aurora of myriad reflections. The realm of imagination is a platform of kalediscopic experiences. The concept of colours creates an inevitable impact on the existence of mankind. Culture, beliefs, history, evolution and discoveries in science and technologies has aided man to explore the exhibition of colours to his satisfaction. The philosophy of colours has a vetted prominence in the prowess of creation.

Publisher



Sooryagatha Publishers

P.O. Box 3517, T.D. Road
Kochi, Kerala - 682 035,

Rs. 150/-

ISBN 9788172550899



9 788172 550899

MATIZ
Flottila of colours

© MS.JULIE DOMINIC A., Dr. ESTHER MANI,
MS. SILPA ANAND S., SR. DANI C. FRANCIS

BOARD OF EDITORS :MS. REELY RAPHAEL , SR .TERESA J
HELOISE, GLADIN ROSE, GINTY GEORGE, HEMALATHA C.S,
ATHIRA T., BENITA P. VINOJ, VARADA U.

First Edition: 2017
Price: 150/-
ISBN: 9788172550899

Copy right

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the author.

Publisher
SOORYAGATHA PUBLISHERS
P.O. Box 3517,
T.D. Road Kochi,
Kerala - 682 035,

CONTENTS

Sl.No.	Topic	Page No.
1.	COLOURS : SELECTIVE MODES OF UNDERSTANDING AND INTERPRETATIONS - <i>Dr. Jayashree C. Kambar</i>	1
2.	COLOUR HITS OUT: A STUDY OF MEENA KANDASAMY'S <i>WHEN I HIT YOU</i> - <i>Ms. Pretty John .P</i>	3
3.	GREEN MALABAR IN NINETEENTH CENTURY: ROLE OF CANOLLY CANAL - <i>Valsa.M.A</i>	10
4.	VISUAL AND TEXTUAL CONSTRUCTION OF SPORTS PAGE: A JOURNEY THROUGH MALAYALAM NEWSPAPER MALAYALA MANORAMA - <i>Elseena Joseph</i>	15
5.	ADVANCES IN VISUAL COMPUTING: AN ANALYTICAL STUDY ON COLOUR STORAGE, DISPLAY AND IMAGE FORMATS IN COMPUTER SYSTEMS - <i>Hitha Paulson,</i>	18
6.	APOCHRAPHICAL GLITTER IN THE BOOK OF REVELATION - <i>Sr. Dani C</i>	23
7.	THE HEIGHT OF COLOUR DISCRIMINATION: AN ANALYTICAL STUDY OF THE BOOK <i>BLACK LIKE ME BY JOHN HOWARD GRIFFIN.</i> - <i>Dr. Bindu Ann Philip</i>	27
8.	COLOURS OF MATHEMATICS - SYMMETRY IN NATURE - <i>Rose Paul</i>	33
9.	THE CASTE IDENTITY OF EZHAVAS IN KERALA: A BRIEF STUDY - <i>Rajitha M.</i>	35
10.	LIFE AND CULTURE OF PIRATES: A STUDY ON LATE MEDIEVAL MALABAR PIRATES - <i>Dr. Arun Thomas M</i>	38
11.	THE REDDISH SCREENS: A SEMIOTIC ANALYSIS ON THE INFLUENCE OF MARXISM IN CONTEMPORARY MALAYALAM FILMS - <i>Sameer Mecheri</i>	43
12.	THE DOMINATION OF COLOUR IN THE INDIAN FOLK CULTURE : A STUDY RELATED TO TRIBAL ART FORMS <i>KATHAKALI AND KALAMEZHUTHTU</i> - <i>Ginty George</i>	48
13.	SYMPHONY OF RESISTANCE THROUGH CHROMATIC EXPRESSIONS IN NATURE - <i>Dr. Esther Mani</i>	50
14.	AN INTROSPECTIVE UNDERSTANDING OF COLOUR DIMENSIONS IN MATHEMATICS - <i>Alphy Jose</i>	54
15.	CAN GREEN BE THE COLOUR OF BLOOD? A DISSECTION OF <i>THE WASTED VIGIL</i> BY NADEEM ASLAM - <i>Jency James</i>	59
16.	COLOUR PERSPECTIVE IN DORIS LESSING'S, <i>THE GOLDEN NOTEBOOK</i> - <i>P.S. Alisha</i>	63
17.	THE CHROMATIC EXPRESSIONS OF CLIMATE CHANGE: REPRESENTATIONS IN LITERATURE AND ART - <i>Silpa Anand S.</i>	65
18.	THE WORLD OF ULTRAPURE COLOURS: AN EXPLORATION OF COLOUR SYMBOLISM IN FAIRY TALES - <i>Nowfiya Nazeer</i>	67
19.	SIGNIFICANCE OF COLOUR IN FOOD AND MARKETING - <i>Benita p. Vinoj,</i>	71
20.	SHADES OF FANTASY: COLOURFUL IMAGES OF THE WORLD DURING SLEEP - <i>Jyothisree V. G</i>	73

COLOUR HITS OUT: A STUDY OF MEENA KANDASAMY'S *WHEN I HIT YOU*

Ms. Pretty John .P, Assistant Professor, Carmel College, Mala

Colours carry different symbolic meanings. Writers have used the colour symbolism as a literary technique in their works to define characters, to develop plot and to give insights to discriminations based on race, caste, gender and so on. Colour communicates and evokes feelings, emotions, identities, memories and beliefs beyond what is expressed.

Meena Kandasamy deliberately uses colours to convey her message to her readers in her second novel *When I Hit You Or, a Portrait of the Writer as a Young Wife* (2017). It is the portrait of the unnamed narrator as a writer-wife in a four-month-and-an-eight-day marriage with a Communist Professor. He sees red when he finds her writing something. Her body becomes black and blue after every torment but not her face. At times, she feels blue after his torture. She has to sail under false colours when she is with him to become his perfect wife. He keeps her in the dark about his first marriage. His vagrant cousin calls her out of blue just to tell her that her professor cousin has already been married before she married the narrator and he is the greatest fraud in their village. After their marriage, many a time she feels browned off when he talks a blue streak about his revolutionary days. His amiable attitude to his in-laws lends colour to his stories about the narrator. In the beginning, the narrator's parents believed the highly coloured report given by him about their only daughter. When they come to know about his true colours, they suggested her to flee from him to save her life. She has been seeking for a golden opportunity and it comes in the form of his dead revolutionary friend's trousers. He goes red in the face when she tells him of his first marriage. She calls him a coward who has abandoned his revolutionary friend's body to his enemies, who has raped and hit his wife. He becomes red with rage and threatens to kill her. She manages to run away from him to her parents.

The repeated usage of certain colours especially red makes colour a strong motif in *When I Hit You*. The consistent colour motifs employed by the writer give character traits and serve as a powerful visual element. It plays a significant role in setting the milieu, mood and tone of the novel. It mirrors the feelings and emotions of the unnamed narrator. Besides the direct meaning, it also connotes opposite meanings or two opposing ideas simultaneously. The reader can feel the omnipresence of the colour red throughout the work.

The narrator appears black as a skillet after her flight from her husband. Listening to her mother, a teacher, talking about her feet while detailing her escape from her monster husband, the narrator describes her pathetic state: "Even when my toes curl in shame" (03). Her mother talks about her cracked heels followed by her beating her rounded mouth with her four fingers making a long O sound: "...her soles were twenty-five shades darker than the rest of her, and with one look at the state of her slippers you could tell that she did nothing but housework all the time. They were the feet of a slave" (04). This not only suggests Tamil women's customary expression in hearing some unfortunate death by mishap or a catastrophe like elopement to signify their disapproval, an amalgamated feeling of sadness and shock, but also their displeasure. There is an implied reference to woman treating as a slave, man is the master. Black colour suggests the absence of light and therefore menacing and the narrator's feet look "like a prisoner's, all blackened and cracked and scarred and dirt an inch thick around every toenail? ...If this is the state of her feet, what must she have endured inside her?" (04-5). Therefore, black signifies her detachment, despair, unhappiness and even her death — death of her dreams about her true love. She yearns for a true lover and voices her imaginary lover: "You, without any masquerade... You, just shining in your own light,

dwelling in your darkness...I need your realness" (90). Death incorporates life or birth too: "I do not know if I'm alive now. This is the kind of alive that feels dead... there are the dead who feel alive." (93). The second "dead" refers to the narrator's stay next to the Nandigudda cemetery.

The narrator's story of "Young Woman as a Runaway Daughter" becomes "the great battle of My Mother versus the Head Lice" (09). She is "brittle and empty like a shell" with black lice swarming in her hair and her mother "would put a white bedsheet over her head and rub her hair and then the sheet would be full of lice" (08-9). Here, black and white colours are purposefully juxtaposed to highlight the miserable and dreary state of the runaway daughter. Her mother resorts to several means to retain her decency and refinement, but in vain. Her multi-cleansers include colourful/colourless shampoo, dried brown *sheekakai*, brilliant blue or erythrosine Nizoral and green neem leaves. They have rinsed out the dirt from her hair but failed to heal the wounds inflicted on her body and soul by her paranoid husband. The narrator's broken marriage has broken her parents too. A runaway daughter at home always becomes an object of condemn and rebuke in the Indian society. She has broken off her "deal with the devil" that she seemed to have made within her marriage (66). The devil directly implies dark force.

Through her narrator, Kandasamy hits out at the different biases based on colour and gender which promotes Othering. The wild, untameable black hair of possessed women has been seen as the sign of the devil itself" in contrast to "the matted hair of women saints and the shorn head of widows, a symbol of their having given up all claims to exercising sexuality" (72). In the colonial years, short untied loose hair was seen as the influence of the Western culture: "a corruption of the local ideal; a symbolism of unbridled, shameless desires; an effort at modernity at the expense of tradition; a betrayal of the national through an allegiance to the white man through a replication of the white woman's styling" (73). In the eyes of the ordinary men, such women in the bazaar have come to be known as the white men's prostitutes: "the one who was sleeping with the enemy, sexually servicing the oppressor, and she deserved the greatest disdain" (74). In the era of postcolonial days, such attitudes have not changed. In the postcolonial classes, everybody speaks of the empire writing back: "But within these classrooms, we are still products of the same empire — carrying our bags of shame and sin" (74). This is neocolonialism where fair is beautiful: "In Cixôus's novel, there is a skin problem. In my world, skin is the problem...and dark women like me have a hard time bursting into intellectual feminist scenes" (103). Helene Cixôus's novel *Hyperdream* has changed the narrator's perspective regarding skin colour: "...has altered me already, made me look at my mother's dark skin in a new light. I imagine this skin you see... as a rose-tinted white with a hint of straw" (103). Here, Kandasamy's statement hints two opposing ideas simultaneously.

Being a writer, more than that, an Indian writing in English, the narrator is always the butt of her husband's ridicule: "The whore in those times was the link, the bridge between the colonizer and the colonized. Today, the link — the writer who writes in English, this bridge — she is the whore" (74). When the *Outlook* magazine asks her for an essay on sex surveys for their annual issue, he makes fun of her and his laughter is his anger in disguise. He blames that she has been asked to write on sexuality because she has the wide-ranging experience of having fucked men ranging from twenty years old to seventy years old:

You are a slave of this corporate media. You are selling your body. This is elite prostitution, where men do not get to touch you, but they masturbate to the image of the woman you represent. This is not freedom. This is sexual anarchy. This is not revolutionary. This is pandering to vulgar imperialist culture. (76)

He accuses her of having slept with the entire editorial team at *Outlook* and she has been particularly intimate with the one who has made the phone call. When they goes to his

dwelling
do not
who fe
cemet

track of her speech and sound effects synchronize with her actions. The background the
and the mood-music is provided by the early morning church bells, the “drop-dead stultura
of afternoons, the chaos of every evening, the cawing of crows that mark the dying viet
light, the slow way the grating noise of crickets seeps in to announce the night, broken rickle
by the heavy trucks that take to the empty streets” (21). *Painfully she observes*

here, I am the actress, the self-anointed director, the cinematographer and sickle, which
screenplay writer. Every role that falls outside of being a wife affords me creasamy's *When*
freedom. The story changes every day, every hour, every single time I sit and existence. In
out. The actors do not change, I cannot escape the set, but with every shift of Communis
perspective, a different story is born. For a movie that will never be made and that a Comm
hit the screen, I have already prepared the publicity material. (22)

One of the narrator's so-called movie entitled “Twelve Angry Men (in Begon with a ble
described as a “bawdy bedside romp features twelve angry men and one bewitching y “now become
who is busy plotting her escape from their ideological clutches” (23). The shot zooms The Russian
her as the young bohemian writer in the company of eleven angry men — Hegel, M. In the novel,
Engels, Lenin, Stalin, Mao, Edward Said, Gramsci, Zizek, Fanon and Che Guevara — marriage, my h
with her angry husband “inadvertently jeopardizing his own position as the object owearing a red
desire” (22). She has to fake orgasmic delight when he injects ideology into her mind iress him in the
She reluctantly plays the role of a recruit by her husband to crusade in favour of a Commle's Commissa
Revolution. The narrator has been fascinated by the broad Left politics since her teenage the Russian
loved Che Guevara, Bob Marley, Fidel Castro's speeches, Soviet children's literaturaction for the
magazines filled with little soldiers and magical creatures with flaming hair waging br to consolidate
against greed and selfishness for the common good. Even after the collapse of Soviet UGreat Terror to
“my blood still ran red” (27). She has attended camps, watched documentaries, bought beven the pear
published from Moscow, from various parts of Chennai and reread the *Communist Mani*
At twenty six, after a tragic relationship with a politician in Kerala, she falls in love vd during the Gr
Maoist University Professor, a former Naxalite guerilla during an online campaign agting to Stalinis
the death penalty. Her first responses to his ideologically relevant questions turns to be I have delete
blunders. She assumes to fight against LPG — Liberalization-Privatization-Globalizaticests many decl
as red cylinders of Liquefied Petroleum Gas and MLM — Marxism-Leninism-Maoism ing behind her
Multi-Level Marketing. Their discussion on Lenin's conversations with Clara Zetkin oplace unsuperv
Women's Question becomesthe clincher to decide him as her life partner. The marriage wants to drive
the self-proclaimed ‘true Maoist’ becomes a “Re-education camp” and a “Communism: “... my Mac's
and she becomes the “wife-student learning from this Communist crusader,” her hushter, the terror f
teacher:

Q: Where does the sun set? A: On the ruling classes, who exploit the working masses. d wield a heavy

Q: What does the sky hold? A: The red star ... d break open m

Q: What do we live for? A: The Revolution... d...” (155). A r

Q: What is love? A: ... ated: “that's the

Q: I said, what is love? A: Communism? -masochist. Th

Q: Correct! And what is Communism? A: Love? adist in him sho

Q: No! Communism is not love; it is a hammer we use to correct ourselves and to crush ed her email ar
enemies (32). ke other Comm

For him, love is Communism. But Communism is not love, it's a hammer to pu up in her own
things right and to use it against their enemies. So, he is not a Communist in the true sand: “Communi
but a paranoid self-proclaimed “true Maoist” (32). The Red represents leftist ideals growth of the
signifies the suffering and sacrifice of the proletariat. The red star has been the lligentsia. The la
Communist symbol since the Russian Revolution. The five points of the red star denote equinary symbolis
the five inhabited continents or the five fingers of the worker. It also suggested the five s The cord of
groups prevailed in Russia — the youth, the military, the peasantry, the industrial wor broomstick t

and the intelligentsia. The hammer and the sickle symbolize industrial workers and agricultural labourers respectively and thus they represent resistance to the capitalist forces. In Soviet Union, the red star embodied the Red Army and the military whereas the hammer and sickle stood for the peaceful labour.

The Communist symbols universally stand for freedom and liberty. The hammer and the sickle, which represent the exploited class, seem no longer applicable in Kandasamy's *When I Hit You*. The narrator's Communist husband has become a threat to her own existence. In the West, "the Red" and "the Red Scare" were used as synonyms for the fear of Communism. In the novel, the narrator's husband has turned to be a dictator: "I must learn that a Communist woman is treated equally and respectfully by comrades in public but can be slapped and called a whore behind closed doors. This is dialectics" (34). She becomes a "moon with a bleeding heart" (113) and "smoke without fire" (117). The "blinking red dot" (135) "now becomes a big red bleeding heart" (145) and "becomes a smoke bomb" (146).

The Russian dictator Joseph Stalin is known to have worn a red star pendant on his attire. In the novel, Kandasamy bestows narrator's husband with Stalinist attributes: "Within our marriage, my husband holds the role of People's Commissar for Labour. (At the moment he's wearing a red T-shirt and jeans. In the art-film version I'm directing in my head, I plan to dress him in the appropriate Stalinist attire.)" (78). Stalin was a prominent member in The People's Commissar for Labour, which replaced the Ministry of Labour of the Tsarist regime after the Russian Revolution. He used to issue emergency decrees to sustain industrial production for the Red Army as part of their Military Communism or War Communism. In order to consolidate his authority, after Lenin's death, Stalin implemented the Great Purge or the Great Terror to purge the Communist Party, the government officials, the intelligentsia and even the peasantry. The methods include forced confessions by extreme torture, surveillance, imprisonment and execution without trial. Around two to six lakh people were killed during the Great Purge. The narrator's husband in *When I Hit You* instills fear in her by resorting to Stalinist methods: "about the stinging slaps that mark my cheeks and only stop when I have deleted what I have written" (87). He wants to declass her thoroughly and suggests many declassing jobs just to keep her away from her writing under the pretext of leaving behind her petit bourgeois lifestyle. It's obvious that he won't let her go to a workplace unsupervised for the fear of losing her. In their marriage, he is the witch-doctor who wants to drive the demons that possessed the narrator. Instead of green neem leaves, he uses: "... my Mac's power cord, his leather belt, twisted electrical cables..." (154). When he hits her, the terror flows from the fear that "today he uses his bare hands, but tomorrow he could wield a heavy-buckled belt, he could grab an iron rod, he could throw a chair, that he could break open my head against a wall. Every day I inch closer to death, to dying, to being killed..." (155). A man can punish a polluted body as he pleases. He considers her body as polluted: "that's the philosophy of caste, that is the philosophy of my rape" (170). He is a sado-masochist. The masochist in him places a red-hot ladle on his arm to threaten her and the sadist in him shouts: "...this knife. Do you feel it. Cold, yes. It will be warm in a second when I slash your throat...The knife will not know you are a famous writer" (203). He deleted her email and face book accounts. "There is no end to his chameleonism" (232-3). Unlike other Communists, he tries to colonize her. The narrator's Quest for One True Love ends up in her own tragedy. It is like the fear of the red menace sets in the form of her husband: "Communist ideas are a cover for his own sadism" (80). He becomes a Red Peril to the growth of the writer in the narrator unlike the real Communist who embraces the intelligentsia. The language used by Kandasamy after the narrator's marriage expressed the sanguinary symbolism of the red:

The cord of my Mac-Book which left thin, red welts on my arms. The back of the broomstick that pounded me across the length of my back. The writing pad whose

edges found my knuckles. His brown leather belt. Broken ceramic plates after a journey as flying saucers. The drain hose of the washing machine. I did not know this was the exemplary life awaiting a newly married woman. (70)

Before their marriage, their future plans were "rosy hazy red" (70). Writing becomes a defiance for her. She decides to write a novel with resistance and defiance as theme: "They swear by the red flag of Communism, pay with their lives" (81). She writes poetry as a better option to verbally entomb her anger. She feels that the therapeutic power of poetry will help her to confront the life's challenges in a better way. But he is fearful of her writing poetry. He sets a permanent injunction upon her restricting her literary creativity against painting her pain into poetry. He gives a meticulous discourse on the materialism and forgets his own discourse on materialism when he writes poems. He has justifications for his actions: "I want this material to remain, to remind me of how cruel I have been, to never let me forget that I have wronged you, to make me feel truly guilty not only because I have forsaken my ideals, I have not behaved like a Communist" (83). Poems are instances of materialism as per his theory. He can write, she cannot. He added: "Your poems blame me. My poems blame me. There is a difference between the hatred that fuels your poems, and self-criticism that forms the backbone of mine." (83). His double standard attitude violates the principle of justice by holding different sets of principles for similar situations. She is crushed in this marriage where he is the poet: "... one of his poems begins:

*When I hit you,
Comrade Lenin weeps.*

(84) I cry, he chronicles. The institution of marriage creates its own division of labour.

The same standards should be applied to all people irrespective of class, colour, and gender. He afflicts pain on her and revels in when his persecution is put in to verse. The narrator's epitomic expression of anger is manifested in four words — "I cry, he chronicles." He has immortalized his tyrannical brutality in his verse. The narrator wonders how an opportunist like her husband managed to make inroads to the Communist Party should always be respected: "For every genuine revolutionary in the ranks, there is a careerist, a opportunist, a manipulator, an infiltrator, a go-getter, an ass-licker, an alchemist, and a dopehead... Parties build themselves on the shoulders of real heroes, nurture them on their bloodshed, even as the imposters make merry" (90). Althusser's strangling of his wife is given as an example for this hypocritical situation. Her husband says that a Communist observes his birthday on the martyrdom day of revolutionary Bhagat Singh. Every feminist writer, including the narrator, suffers from depression: "Three inches of cleavage, two books of poetry, plenty of sex and depression — that's all it takes to make a woman a feminist writer. Beginning from Sylvia Plath to Kamala Das, that is the only trajectory you have followed" (151). For him, depression is a symbol of meaninglessness of bourgeois existence. In *When I Hit You*, words especially pertaining to colours play a significant role in the development of the plot and characterization. Intermittently, Kandasamy alternates between first and third person narratives: "I am the woman at whom society cannot throw stones because this me is a she who is made up only of words on a page, and the she speaks are those that everyone hears in their own voice" (246). Her personal becomes universal. Her microcosm becomes macrocosm. She voices:

The only body I feel empowered to share is the body I fashion out of my own words.
My skin acquires the right shade not in mirrors but when I write down. Then, it is not fair or dark, it is not rough or glowing, it is not a skin that gets judged and condemned. It is skin on a woman like the bark on a tree. Brown, clearer under the moon, softer in the monsoon, brighter in sunshine, flaming in twilight. (240)

The unnamed narrator can be any woman. The different colour motifs unveils the extremity of degradation subjected on the narrator protagonist by her husband. But, in the end, she retains control of her story. Kandasamy has successfully used the power of colour to empower not only herself but also the reader. She has successfully used many instantly recognizable colours as symbols of Othering and grabs the attention of the readers because of its high visibility.

WORKS CONSULTED

- Kandasamy, Meena. *When I Hit You Or, a Portrait of the Writer as a Young Wife*. New Delhi: Juggernaut, 2017. Print.
- Timeja, Preti. "When I Hit You Or, a Portrait of the Writer as a Young Wife by Meena Kandasamy: A Review." *The Guardian*. 07.07.2017. Accessed Date. 28.10.2017. Web.

étude

A Multidisciplinary
Research Journal

English

All literatures in general have an artistic as well as a didactic content incorporated within their framework and this is more explicit in literature written for children. It is ironic in a way that while it is ostensibly for children, it relies on adults for its existence and children are only passive consumers. It thus becomes a vehicle of power, a socialization device that has been employed by adults for centuries. The papers discuss some of the ways in which Children's Literature and the research that it inspires can be a productive and valuable asset to education.

Hindi

The history reveals the spirit of resistance mankind has shown to achieve freedom and social identity. The fearless steps put forward by the writers, thinkers and social reformers bear testimony to this fact.

Malayalam

Emphasizing the inevitability of mother tongue, the section on Malayalam discusses its politics and how mother tongue can be used at the level of cognition and structures to attain real democracy.

étude is a multilingual peer reviewed ISSN journal.

étude, as a rule, publishes only original and unpublished research articles.



Published by
IQAC
Panampilly Memorial
Government College
Chalakudy



Reviewed

ISSN 2394 - 6482
Volume - IV
June - 2018

étude

A Multidisciplinary
Research Journal

THROUGH THE MAGNIFYING GLASS

*Modern Perspectives and Innovative Practices
in Children's Literature*

हिन्दी साहित्य में प्रतिरोध की संस्कृति

മാതൃഭാഷയുടെ രാഷ്ട്രീയം



Published by
IQAC
Panampilly Memorial
Government College
Chalakudy

PUBLISHED IN INDIA BY

The Coordinator, Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
of the Panampilly Memorial Government College (PMGC)
Chalakkudy, Potta P. O., Thrissur District, Kerala, India. PIN 680722
email: pmgcaqc@gmail.com / pmgcprincipal@gmail.com
http://www.pmgc.ac.in

© IQAC/PMGC 2018

The moral rights of the authors have been asserted

This book is in copyright. Subject to statutory exception and to the provisions of relevant collective licensing agreements, no production of any part may take place without the written permission of the Coordinator, IQAC, Panampilly Memorial Government College, Chalakkudy, Kerala, India

(This book has been published in good faith that the works of the authors are original and due credits have been given wherever applicable.)

Published in June 2018

Managing Editor:

Dr. V. Manikantan Nair, Principal

Chief Editor:

Dr. N. A. Jojomon, Coordinator, IQAC

Editorial Board:

Dr. N. Sreerakha, Dr. N. A. Jojomon, Dr. S. L. Sreekumar, Dr. Prakash G. N.,
Shri. Shinto M. Kurakose, Smt. Fouzia P. A, Dr. Leena Samuel

Issue Editors:

Dr. Deepa K. S. (English) Dr. B. Parvathy (Malayalam),
Dr. Leena Samuel (Hindi)

ISSN: 2394 - 6482 Etude

Printed in India by Nirjala Offset Printers,
Chalakkudy, Kerala +91 480 2701259

FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY - NOT FOR SALE

Preface

The society as we see today has been evolved over centuries, having passed through and undergone various changes. Across all stages of its transformations there were influences of differentiations like gender, caste, community, language, power, education, politics, age etc. It is evident from the backdrops of history that later on, these differentiations formed the basis for 'upper' and 'lower' cataloging in the society. At all stages of its evolution, the 'upper category' enjoyed superiority and in its extreme sagacity, there were even moves to permanently chain the 'lower crest' in the manacles of segregation and permanent deprivation. Revolutionaries and social transformers of all times, right from the prehistoric era, have raised voices against these evils and visualized an egalitarian society where all move and live together with dignity and pride.

This multi disciplinary trilingual issue of 'etude' tries to place on record the efforts of selected social reformers across the academic disciplines of English, Hindi and Malayalam social activists who have played vital roles in moving mobs to rise in revolt against social, gender and lingual discriminations thus paving the foundations of an ideal society. It also focuses on the need for having a passion for the mother tongue. All the articles in this book have been brought up after careful evaluation and peer reviews by experts in the field. I am sure that this manuscript will stand out in the academia as excellent studies on struggle for equity, identity and mother tongue.

With best wishes

June 2018

Dr. Jojomon N A
(Chief Editor & IQAC Coordinator)

Contents

Internal Peer Review - 1	9
Dr. Deepa K S	
1. Watching the Grass Grow: Passive Learning through Poetry	11
Dr. G. Saravana Prabhu	
2. Revising the Gendered Stereotypes: A Study of Kamla Bhasin's Selected Children's Poems	14
Pretty John P.	
3. From Superheroes to Spartan Warriors: Exploring the Influence of Comics on Cinema	22
Seema K. V.	
4. Hermione Granger, Katniss Everdeen, and the Probability of Indispensable Girl Leads in Children's Fiction	26
Aiswary S. Babu	
5. <i>Life of Pi</i> as a Children's Novel and as a New Fable of Human Existence	33
Swathy Krishna	

2

Revising the Gendered Stereotypes: A Study of Kamla Bhasin's Selected Children's Poems

The paper 'Revising the Gendered Stereotypes: A Study of Kamla Bhasin's Selected Children's Poems' discusses the way in which gender identity, with its concomitant beliefs and stereotypes tends to be a harmful influence on the lives of children. It attempts to subvert traditional notions of gender identity.

Some poems meant for children, especially nursery rhymes, are linguistically useful, but cognitively harmful for them. Though they play a significant role in the child's development of language, many of them are conceptually structured on gendered stereotypes. While reading or reciting them, a child may not fully perceive the gendered bias incorporated within the language of these poems. But they reinforce gender stereotypes through constant repetition. Nursery rhymes with their simple diction, picturesque description and captivating rhythm arrest the attention of the children.

The family images given in the school text books shows mother in the kitchen, father on his way or back from work with an earnest boy and a well-behaved girl. That is, father as the breadwinner, mother as the so-called "housewife" taking care of every minute detail of the household and children studying, playing or eating food. One cannot find a changing family world where mother too go for paid work, where father lends a hand in the kitchen, and where children too actively take part in the household activities with all the innocence of childhood. "His Story" has been projected imposing certain qualities into/onto the woman, depending on the masculine requirement of the moment and she is forced to dream through the dreams of man. The present study seeks to analyse the revised gender stereotypes in the well-known social scientist, feminist activist and poet KamlaBhasin's selected children's poems.

According to Simone de Beauvoir, the different definitions of "woman" by the patriarchal society have placed her as the "Other" to man, as the negative, as the relative. Analyzing the marginal position of women in the patriarchal society, she remarks in *The Second Sex* (1949): "One is not born, but rather becomes a woman — it is civilization as a whole that produces this creature ... which is described as feminine" (1972: 295). She points out how sex is natural while gender is a social construct. She meticulously observes: "She is defined and differentiated with reference to man and not he with reference to her. She is the incidental, the inessential as opposed to the essential. He is the Subject, he is the Absolute — she is the Other" (1972: xvi). Thus, the male associates himself with masculine qualities like strength, logic, reasoning and the female is attributed with fragility, poignancy and thoughtlessness. Deborah Cameron has given insights to the language's relationship to gender and sexuality in her introduction to *The Feminist Critique of Language: A Reader*: "If we look at a society's most valued linguistic registers — religious ceremonial, political rhetoric, legal discourse, science, poetry — we find women for the most part silent and in many cases silenced: it is not that women do not speak, they may actually be prevented from speaking, whether by explicit taboos and restrictions or by the gendered tyrannies of custom and practice" (1983: 03). Dale Spender in her *Man Made Language* (1980) observes that language is a trap because language makes reality: "It is language which determines the limits of our world, which constructs our reality" (Cameron, 1998: 94). Constructed categories within language organize the world: "This makes language a paradox for human beings: it is both a creative and inhibiting vehicle... out of nowhere we invented sexism, we created the arbitrary and approximate categories of male-as-norm and female as deviant" (Cameron, 1998: 96). Spender argues that "He/Man language" makes males linguistically visible and females linguistically invisible: "The introduction of he/man into the structure of the language has helped to ensure that neither sex has a proliferation of female images: by such means is the invisibility of the female constructed and sustained in our thoughts systems and our reality" (Spender, 1980:154). The poet-critic Adrienne Rich identifies the "oppressor's language" as a cause of many injustices and sufferings. The oppressor's language is the "male-centered" or "andro-centric" language which will only perpetuate male hegemony. The construction of a "gyno-centric" language or "female-

Ms. Pretty John P.
Assistant Professor
Carmel College, Mala
Email:
prettyjohnjose@gmail.com

centered" language is the only solution to express unique female experiences. In order to purify language, myths are to be revised. Revisionist myth-making results in the re-interpretation of myths from the female perspective. This process, according to Alicia Ostriker, gives "retrieved images of what women have collectively and historically suffered" (1985:14). Thus, the images of what women have collectively and historically suffered – either the paragon of all virtues or the demon figure of all misrepresented images of women – have been revised by the "female knowledge of the female experiences" (Ostriker, 1985:14). Thus, the revisionist myth-making results in the invention of a unique, but equal, female-centered language.

In the preface to her work *Housework is Everyone's Work: Rhymes for Just and Happy Families*, Bhasin notes:

Most books were about boys and men, about their brave deeds, adventures, aspirations and ambitions. They were usually shown as brave, fearless and independent-minded. On the other hand, whenever girls and women found a place in these books, they were housekeepers. The few books featuring girls however showed them in traditional roles of daughters, wives, fearful and dependent. Unfortunately, this has not changed much in today's world.

Bhasin finds an extensive and pandemic use of sexist language in children's literature. The gender markers for children include clothing, names, toys, activities, and so on. The objects and toys or toy-analogs related to domestic activities are associated with feminine and those related to non-domestic activities are attributed to males. Thus nursery rhymes reinforce gender stereotypes. Bhasin observes in her preface to *What is a Girl? What is a Boy?*

Even after 50 years of Independence girls and women in India are considered second class human beings. The birth of a daughter is often not celebrated, she is denied adequate love, care, nutrition, health care. The saying "butter for boys, buttermilk for girls" is still a reality. Some families go to the extent of killing their daughters before they are born. The existence of such blatant discrimination and injustice within the family surprises me because it harms not only girls but the entire family and the whole community. Can any farmer be happy if only half his/her crop is healthy? Then how can families and communities be happy if half their members are unhealthy, unhappy, uneducated? We believe it is necessary to challenge and change this state of affairs. (iii-iv)

Bhasin's rhymes challenge the sexist attitude followed in the Indian families. She adds "Some people believe that it is Nature that has created the differences and inequalities that exist between men and women. Is this true? ... Are the qualities, behavior patterns, likes and dislikes, skills and paths of girls and boys determined by nature or by all of us who constitute society?" (iv). In *Housework is Everyone's Work*, Bhasin glorifies the significance of every member in the family and if they work together, there will be happy and just families. Her rhymes with their simple and straightforward titles attract the attention of the readers. For example, in "Sleep Little Meeto," the Father sings a lullaby to put his little girl to sleep.

As the title of the book suggests, the rhymes are not all about household chores. In fact, men, women, girls and boys can do anything irrespective of gender. Bhasin argues in *What is a Girl? What is a Boy?*: "These gender differences have not been created by nature. Nature produces males and females, society turns them into men and women, feminine and masculine. Because of these social definitions, the differences between girls and boys go on increasing and it seems as if girls and boys belong to two entirely different worlds." (30-1) Bhasin has written rhymes which reflect the ambience of her own home. These rhymes were at first written in Hindi in the early 1980s and the anthology was republished by UNICEF in 1982 and its translations have appeared in five languages.

Some rhymes in *Housework is Everyone's Works* show what the Mother can do, if there is right ambience. In "Champion Mother," she is an all-rounder who can excel in various sports activities. The kids feel proud to play with her. In "Mama Dearest Mama," she is a working mother:

Mama's back, Mama's back
She's brought me books and toys
She'll tell me lots of stories
Of distant girls and boys.
She'll teach me many new things
She'll take me to the park
She knows how rainbows form and
How cats see in the dark.

The child waits impatiently for her to come back home from the office to tell her stories and take her to the park. The Mother is portrayed as a very knowledgeable person. The illustration shows a sari clad woman with a briefcase being greeted by her daughter. The picture appeals even stronger than words amongst kids. In "Mother," she lists the unending work as the woman of the house:

Mother works away all day
Through the week and all Sunday
She always has something to do
She always has some task in view
She bears a burden all alone
She wears herself down to the bone
Not a moment does she stay
Mother works away all day.

Bhasin suggests to consider mothers as human beings and she exhorts life will be easier if the family members work together:

Don't you think this is unfair?

Shouldn't we help and do our share?
 Father's going to dust the chairs
 Meeto will now sweep the stairs
 I will help to clean the pots
 We'll all wash the clothes in the lot.
 Housework's everyone's affair
 Let's all help and do our share.

Woman with her multifaceted personality has to perform several roles – daughter, sister, wife, mother and so on. Along with housewifery tasks, she has to do the duties associated with her professional career. The economically productive labour of the public sphere is allotted to men while the economically non-productive labour of the private sphere is assigned for women. Feminists critique the gendered division of the public and private spheres and the irrational and unjust gendered division of labour. This has "privatized" women restricted to family roles in 'spiritualized,' emotionally barren, and despotically patriarchal households. The division between public and private spheres is, in effect, a division between the masculine and the feminine and it is a patriarchal strategy used to confine women to the private sphere of domesticity. Bhasin muses on the gender discrimination in her *What is a Girl? What is a Boy?*: "Within the same family, we can see boys flowering, girls withering. Such gender differences do not harm only girls, they harm the entire family, community and country. Several rigid roles, qualities and responsibilities are imposed upon boys as well. They too are prisoners and victims of gender" (37-8). She adds:

...girls and boys can dress, play, study any way they want, and grow up as they choose. Having a girl's body does not teach you household work or caring for others; a boy's body does not ensure fearlessness, intelligence, strength. All these qualities are learnt. It is one's upbringing that determines how one grows, what one becomes. If we so desire, we can create a society where roles, responsibilities, qualities and behavior patterns are not determined and imposed by gender, caste, class or race, a society where everyone has the right and freedom to choose roles, develop talents... to have a life of one's choice. (40-1)

In "Girls and Boys," Bhasin opines that if children do not learn to treat girls and women with respect within their families, they are not likely to respect women outside either:

In singing songs or flying kites
 In running fast or climbing heights
 At school or home, with books or toys
 Girls are no way less than boys

Both girls and boys are equally talented. It is their upbringing that decides their growth and future. There is a role-reversal in Bhasin's poems. The gentle father figure in them plays with the children, tells them stories, bathes them and what not. In "Grow Up Baby," he changes their nappies:

Father changes baby's nappy
 Look at him now clean and happy.
 Grow up baby, just a bit
 Learn to toddle, learn to sit,
 No more nappies no more wet
 That's our bouncy joyful pet.

In "It's Sunday," the illustration shows a smiling father holding two cups of tea and the mother reading newspaper on a Sunday:

Father's like a busy bee
 Making us cups of hot tea.
 Mother sits and reads the news
 Now and then she gives her views.

Sunday is a "fun day" for all the family members. In "Washing Clothes," all share their work:

The clouds are gone—it's sunshine weather
 Let's wash clothes along with mother
 Mother will soap them
 Father will wring them
 And you and I
 Will hang em to dry

Here, Bhasin enlightens her little readers that domestic chores are not just women's work alone, but every member in the family. She adds: "When they're dry and ironed crisp / Let's dress quickly for a trip." Everyone has an equal share in the household duties to make a happy family. Bhasin's *MaluBhalu* is about a little polar bear who is portrayed as impatient, adventurous and intelligent. Her mother teaches her how to swim and catch fish:

Brave mother's brave young daughter!
 Doubt and fear she left behind her.
 Malu swam with all her might,
 It didn't matter wrong or right.

Malu and her family have a narrow escape from the hunters by working out her idea to curl up like a ball of snow shutting their eyes.

Speech and silence are two strong and influential metaphors used in feminist writings. These terms are used to express women's right to speak or their denial of this human rights. Quite often, they are silenced or made silent and their uses of language are restricted to the private sphere. Existing customs, practices, taboos and stereotyped images are appropriated to keep women away from the public domains. Women's imposed silence is a powerful weapon used by patriarchal structures to perpetuate the subordination of women. Bhasin advocates that gender sensitization can only be achieved by giving equal opportunities to education. "Because I am a Girl, I must Study" represents the epitome of her ideas:

BECAUSE I AM A GIRL, I MUST STUDY

A father asks his daughter:
Study? Why should you study?
I have sons aplenty who can study
Girl, why should you study?

The daughter tells her father:
Since you ask, here's why I must study.
Because I am a girl, I must study.

Long denied this right, I must study
For my dreams to take flight, I must study
Knowledge brings new light, so I must study
For the battles I must fight, I must study
Because I am a girl, I must study.

To avoid destitution, I must study
To win independence, I must study
To fight frustration, I must study
To find inspiration, I must study
Because I am a girl, I must study.

To fight men's violence, I must study
To end my silence, I must study
To challenge patriarchy I must study
To demolish all hierarchy, I must study.
Because I am a girl, I must study.

To mould a faith I can trust, I must study
To make laws that are just, I must study
To sweep centuries of dust, I must study
To challenge what I must, I must study.
Because I am a girl, I must study.

To know right from wrong, I must study.
To find a voice that is strong, I must study
To write feminist songs I must study
To make a world where girls belong, I must study.
Because I am a girl, I must study.

-- Kamla Bhasin

The ability to read and write is a powerful source of energy often denied to the less privileged women. The patriarchal structures fear that access to fruitful education, speech and writing will make woman independent, rebellious and critical of customs and traditions. Even if women dare to speak or write, they are quite often ridiculed, isolated, ignored, criticized and they become the easy target of vehement and venomous attacks.

Reality represented by language is mediated by the ideological conditioning of the medium and the perspective. In this regard, she adds: "When there are sexist language and sexist theories culturally available, the observation of reality is also likely to be sexist. It is by these means that sexism can be perpetuated and reinforced as new objects and events, new data, have sexist interpretations projected upon them" (Cameron, 1998: 96). Language plays a significant role in shaping the world. There are more words for males than for females and most of them are positive. Many words for women assume negative connotations. Males have encoded sexism into language to claim male supremacy: "...he/man also makes women outsiders, and not just metaphorically. Through the use of he/man women cannot take their existence for granted; they must constantly seek confirmation that they are included in the human species?" (Spender, 1980:157). This is how language becomes a political medium. Women are overshadowed by the patriarchally surcharged development of language.

Children imbibe the gendered messages in the lullabies which are replaced by rhymes in their later school life. Bhasin's children's poems provide alternative narratives to the existing gendered stereotypes in the patriarchal society. She has made an attempt to correct the classic gendered stereotypes in her children's poems by re-interpreting them. She substantiates that it is the maleness of language that makes women invisible and gender is thus, constructed through language. Subverting the conservative gender discourses, Bhasin offers a progressive and resistant discourse through her revisions.

Works Cited

- Bhasin, Kamla. "Because I am a Girl, I must Study." Blog Home. Voices from the Frontlines. 26 April 2012. Accessed 05 January 2018. Web.
- ---, . *Housework is Everyone's Work: Rhymes for Just and Happy Families*. Delhi: Jagan, 2008. Print.
- ---, . *MaluBhalu*. Chennai: Tulika, 1999. Print.
- ---, . *What is a Girl? What is a Boy?*: Kathmandu: Shree Shakti, 1998. Print.
- Cameron, Deborah. *The Feminist Critique of Language: A Reader*. New York and London: Routledge, 1998. Print.
- De Beauvoir, Simone. *The Second Sex*. Tr. H. M. Parshley. Harmondsworth: Penguin Books, 1972. Print.
- Ostriker, Alicia. "The Thieves of Language: Women Poets and Revisionist Mythmaking." *The New Feminist Criticism*. Ed. Elaine Showalter. New York: Pantheon Books, 1985. p.11-35. Print.
- Rich, Adrienne. "When We Dead Awaken: Writing as Re-Vision." *College English*, Vol.34, No. 1, Women, Writing and Teaching (October, 1972). National Council of Teachers of English, 1972: p.18-30. Print.
- Spender, Dale. *Man Made Language*. New York: Routledge, 1985. Print.
- ---, . "Man Made Language." *The Feminist Critique of Language: A Reader*. Ed. Deborah Cameron. New York and London: Routledge, 1998. p.93-99. Print.

About the book

This is a compilation of peer reviewed papers pertaining to the field of Trauma Studies presented at the National Seminar held at Govt Arts and Science College Ollur on 22 and 23 November 2018.



EDO

Department of English, Govt Arts and Science college Ollur, 680306



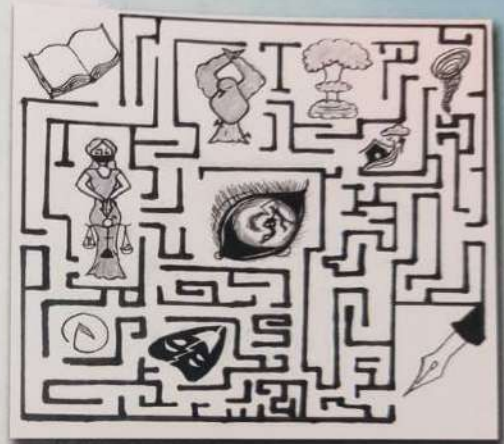
**Unclaimed Experiences and Forbidden Zones :
Trauma in all its Manifestations**

**Honey Sabu &
Seenia Tom Kanady**



Unclaimed Experiences and Forbidden Zones

Trauma in all its Manifestations



with an introduction by Dr. C.G. Shyamala

Proceedings of the two day National Seminar held on 22 & 23 November 2018 organized by the Department of English, Govt. Arts & Science College Ollur



Sponsored by the Directorate of Collegiate Education, Govt of Kerala

Editors

Seenia Tom Kanady
Assistant Professor
Govt. Arts & Science College, Ollur
Honey Sabu
Assistant Professor
Govt. Arts & Science College, Ollur

Cover design : Afreen Asafali

Published by



Department of English

Govt. Arts & Science College Ollur,

District Thrissur

Kerala, 680306

Unclaimed Experiences and Forbidden Zones

Trauma in all its Manifestations

Proceedings of the two day National Seminar held on 22 & 23 November 2018 organized by the Department of English, Govt. Arts & Science College Ollur. © 2018, Department of English, Govt. Arts & Science College Ollur

Sponsored by the Directorate of Collegiate Education, Govt of Kerala

All Rights Reserved

No part of this book maybe reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form by any means, without prior permission of the publisher. The publisher, the authors and the editors are safe to assume that the advice and information in this book are believed to be true and accurate at the date of publication. Neither the publisher nor the authors or the editors give a warranty, expressed or implied with respect to the material contained herein or for any errors or omissions that may have been made.

ISBN : 978-93-5346-453-0

Printed at Educare, Thrissur

Proceedings of the National Seminar on “Unclaimed Experiences and Forbidden Zones: Trauma in all its Manifestations” organized by the Dept. of English, Govt. Arts and Science College, Ollur, sponsored by the Directorate of Collegiate Education, Thiruvananthapuram on 22 and 23 November 2018.

**Gendered Surveillance as Trauma in Ecotopia : A
Critique of Manjula Padmanabhan's *The Island of Lost
Girls***

Pretty John P.

The term 'utopia' refers to an ideal, non-existent political and social way of life. The utopia represents an ideal state which is incredibly superior to the contemporary world whereas dystopia embodies a very unpleasant imaginary realm in which negative aspects of the present day world including the social, psychological, technological and political predispositions are projected into a very catastrophic, bleak and devastating future. In ecotopian fiction, the writer imagines either a utopian or dystopian world or both, revolving around environmental conservation or destruction. Sometimes ecotopia is used as a metaphor for the diverse directions humanity can choose, ending up with one of two probable prospects.

Various surveillance techniques are used in dystopia to monitor the human populations. In *Discipline and Punishment: The Birth of Prison* (1979), Michel Foucault revises Jeremy Bentham's conceptualization of the panopticon as he expands upon the purpose of disciplinary apparatuses and explains the function of discipline as an apparatus of power. According to him, the ever-visible inmate is always the object of information, never a subject in communication. Panopticism gives an authoritative figure the "ability to penetrate men's behavior" without difficulty

and "... he who is subjected to a field of visibility, and who knows it, assumes responsibility for the constraints of power; he makes them play spontaneously upon himself; he inscribes in himself the power relation in which he simultaneously plays both roles; he becomes the principle of his own subjection" (Foucault, *Discipline* 202-203). Foucault's panopticism is concerned with the organized monitoring of human populations through elusive and often invisible forces. Such controlling is invisible or at times visible in many parts of the ever more digitalized world of information. Contemporary developments in science and technology have perhaps made Foucault's theories more pertinent in the case of surveillance techniques. The digitalized version of this is Information Panopticon which can be considered as a form of centralized power that uses information and communication technology as observational tools and control mechanisms. Shoshana Zuboff applies the theory of panopticism in a technological context in her *In the Age of the Smart Machine* (1988). Unlike the Panopticon envisioned by Bentham and Foucault, in which those under surveillance were unwilling subjects, Zuboff's work proposes that the Information Panopticon is enabled by the benefits it offers to willing participants (Zuboff, 326). The reversal of panopticon namely synopticon also happens now and then. The synopticon is concerned with the surveillance of the few by the many. Surveillance includes sousveillance too which is the recording of an activity by using small wearable or portable personal technologies. The term sousveillance,

coined by Steve Mann is a portmanteau of two French words *sur* meaning “above” and *sous* meaning “below.” Sousveillance is done by bringing the camera or other means of observation or auditory recording.

Manjula Padmanabhan’s *The Island of Lost Girls* (2015) depicts a futuristic ecotopia. It delineates repressive sexual ideologies by juxtaposing a frightening dystopian woman-world under clone Generals in the Forbidden Country of Brotherland as against a utopian all female world in the Island of Lost Girls. It portrays alternate worlds of digital surveillance coupled with power structures of dictatorships. *The Island of Lost Girls* is the story of Meiji, the only girl who has remained untouched and unmutated in a country that has savaged its entire female population. Having saved her from certain death in the new Dark Age that has come upon the world, her guardian, Youngest/Yasmin, has transported her to the only place where she can remain safe – the Island of Lost Girls, where wounded girls are, sometimes literally, stitched back together and given a new life. The novel describes his struggles against the surreal inhabitants of a world gone wrong and with his own transformed identity as a transie to save himself and Meiji.

Through a post-apocalyptic world, Padmanabhan exposes the predicament of transgenders, drones and wo/men with their confusing gender identity and presentation imposed on them by the cloned Generals with

radios embedded in their jaws who wanted to create a perfect world without ‘vermin’ women. The oppressive and controlling Generals have isolated their region from the rest of civilization to evade the corrupting effect of women because they believe that women are inferior versions of men. When they came to power, they have forced all the men to destroy all the women in their region: “*All the women*. The women who resisted were hunted down, dragged into the streets and butchered. Grenades were inserted to their private parts. Their entrails were hung from the trees like garlands. Unborn babies were torn out of their wombs... Any men who resisted were treated in similar ways (Padmanabhan 69). The threatening world with extreme violence executed on women itself makes it a dystopia. As Vane, the woman mentor of the *Island of Lost Girls* has stated in the novel:

Whatever you might call it, allow me for the moment to refer it to as a Trauma. A wounding. An assault. Some of you — most of you, I should say — have known enormous damage... Some of you have scars, some of you have missing limbs. But all of you, along with the physical traces of wounds, have invisible wounds, too. (Padmanabhan 69)

The novel offers warnings by giving nightmarish images about what might happen in the near future: “Those who tried to stand up to the abuse were ritually humiliated by being raped by the whole community or stoned to death.

Eventually it was decided that women as a class were no longer necessary to the human race because reproduction could be managed through cloning and the use of animal surrogates such as cows and apes" (Padmanabhan 120). It also reflects the popular concern with the effects of nuclear radiation on the environment and survivors after this massive, worldwide disaster which makes novel's setting as post-apocalyptic. Thus, it posits a future in which gender identity, pollution, climate change and their horrible consequences can make the earth an ecological dystopia. This eco-dystopia is contrasted with an eco-utopia in the Island of Lost Girls governed by Vane. Through this eco-utopia, Padmanabhan contrasts the present world with an idealized society and critiques contemporary values and conditions and sees men or masculine system as the major source of social and political problems and presents women as equal to or superior to men, having rights over their reproductive functions. Padmanabhan's delineation of female-only world agrees to the exploration of female individuality and freedom from the dominating patriarchy. The gender inequalities are intensified to show gender differences or gender power imbalances in the society. Both worlds are single-sex worlds. Surprisingly, heterosexuality is replaced by homosexuality.

The area to which Youngest/Yasmin belonged, the Brotherland, was renamed the Forbidden Country. When the echo-anarchists of the Brotherland nuclear bombed, they were burned out from the memories of the all decent people.

It "has been struck off maps. Whose people have been erased from the register of humanity" "for crimes against the entire planet" and for poisoning the sky and the oceans" (Padmanabhan36). They have never approached the Whole World Union to apologize for their unspeakable crimes. There is no direct trade, travel arrangements, communications and relocations between the four enclaves in the Whole World Union formed after the nuclear detonation of the Suez Canal. The Red Sea became the Poisoned Sea. Even the flying birds fell down dead because of the extreme radiation pollution in The Void or the Deadly Ocean. The Zone Enclave dominates the other three enclaves – Ring, Sunrise and Pacific. It is immensely notorious for its popular continuous cycle of savage war games. No one take notice of the vanquished Zone Warriors who are "bleeding, writhing in pain, dying on the sand" (Padmanabhan19). Games in the Zone enclave believe to erase disparity amongst the people but it turns to be vice versa: "There was a never enough funding for a Women's Team or even a Trans Gender Team. Once it was clear that there would only ever be all-men's teams, the whole shameful exploitation of women who live in the Zone—as booty, as trophies, as entertainment, whatever became the established norm" (Padmanabhan 312). People are allowed to speak only three languages which includes pidgin in the Zone – Unida, Arabic and Modi Kung – and no script except for the numerals written in Arabic. They are given speech-aids so as to ensure the speaking of these three languages. According to Youngest/Yasmin, the age of

knowledge-gathering belonged to the Time Before: "In this post-cataclysmic world, there was no place for scientific curiosity or intellectual pursuit. There were no books, no scholars, no universities. No paper. No written scripts" (Padmanabhan 116). The novel thus explores the impact of science and technology on the earth.

The Island of Lost Girls gives insights into how single-gender worlds or single-sex societies can be developed through the various discourses of power. This is a constant motif in speculative fiction. The women in the Zone known as "feems" are the resources of courage for the warriors. Transie, "a universal figure of ridicule," can do nothing other than offer sex in the pleasure industry (Padmanabhan34). The Island of Lost Girls is a matriarchal utopia of female-only or female-controlled society. It takes in women who are partially or completely dead in the violence that has been caused by the dystopian society. They stitch their bodies together giving them psychological and social rehabilitation: "There are no virgins left in our world. We are all virtually deflowered immediately after our birth. To demystify the cult of purity" (Padmanabhan54). The only virgin is Meiji. Ironically, the virgin girl has been raised as a boy. Meiji does not know about her existence as a woman in the Forbidden Country. She masquerades as a man and is asked to wear prosthetics to hide her sexual parts. Youngest has been forced to undergo sex-change surgeries by the cloned General to Yasmin, the transie: "I'm not free to smile, he thought. I'm not a man dressed in a woman's

body. I'm pathetic, witless maniac. I should be locked up. I should die" (Padmanabhan 14). In this regard, Youngest/Yasmin states that Meiji "is the jewel at the centre of my existence. Yet I cannot afford to keep her. My heart is breaking" (Padmanabhan54). In order to save her, he succumbs to the desires of the General. The dictator is able to know about his whereabouts because of the three electronic leashes embedded in him – the twin satellite locators, one on his wrist, and the other over his heart along the pain-radio in his teeth. He is only able to feel a ghastly silence other than sounds from the audio chip permanently implanted in his upper jaw which always remind him "*Find – the-island. Do-your-duty. In – the – name – of – all – true-men. Sell – the-girl.*" A single thread of continuity in the disorderly confusion of his life" (Padmanabhan48). After receiving the speech aid from Aila, another transie, he feels that his own voice is no longer his own. "Eraser" has made Aila to forget and forgive Youngest/Yasmine who killed her father to save himself: "Everything goes. Sadness, fear, pain, everything" (Padmanabhan39). She even cut off the nails of her dead father to use it as nailgrams or holograms as identity for Youngest/Yasmine to reach the Collectory of the Zone.

The women in the distant past of the Brotherland before their extermination "were always fearful of being watched" (Padmanabhan57). Tiny robotic cameras namely shutter flies always buzz above the people: "... the sense of being observed persisted" (Padmanabhan 104). Foucault

posited sexuality as located within structures and discourses of power. Certain forms of sexuality were constructed as unnatural and evil and its practitioners were placed under surveillance. Women mentors in the *Island of Lost Girls* too uses cameras: "...there were surveillance cameras, whoever was watching him surely knew that, for the moment, he was defeated. Their message to him was very clear" (Padmanabhan 208). Not only Youngest/Yasmin who comes under the surveillance of both the Generals and the Women Mentors but also Meiji who during her stay at the *Island of Lost Girls* says: "So they are watching me...They waited for me to sit up" (Padmanabhan 211). On another occasion, Meiji laments over condition of losing control over her own thoughts: "To be so helpless as to lose the privacy of her own mind. To be deprived of her own memories. She could no longer form complete thoughts" (Padmanabhan 211). At times, she feels she is "trapped in an elongated capsule about four metres long, with no idea..." (Padmanabhan 224). In this novel, the cloned Generals want to eradicate female from the world and use various forms of monitoring including sousveillance. There are both physical sousveillance by embedding chips by the authoritarian regimes on people rather than on buildings and hierarchical sousveillance by people like Youngest/Yasmin doing the watching, rather than Generals doing the watching. Towards the conclusion of the novel, inverse surveillance also takes place. Youngest/Yasmin is asked by Vane, the spearhead of the *Island of Lost Girls*, to become an informer about the misdoings of the cloned Generals because both are the

subjects of surveillance of the eco-anarchists. So, one can see a transition from surveillance to inverse surveillance in the novel.

Setting on a near-future earth, Padmanabhan has tried to increase women's visibility and perspectives in her science fiction. Through her presentation of an ecotopia in *The Island of Lost Girls*, she is able to critically assess the rapidly changing social, cultural, and technological landscape and its impact on gender identity illuminating prevailing injustices of society irrespective of gender. The novel poses intricate questions about the nature of gender and sexuality as well as the prey/predator outlook in the post-nuclear world. Placing the text in a gendered environment, the writer makes a real contrast with present-day gender relations while remaining a work of science fiction. Padmanabhan uses ecotopia as a literary technique to discuss the reality and describe issues that might happen in future thereby serving as a warning about the problematic issues related to contemporary power structures. She tries to prove that sex and sexuality can be spaces of real traumatic oppressions through different gender representations.

Works Consulted

Foucault, Michel. *Discipline and Punishment: The Birth of Prison*. Vintage Books, 1979.

MannS., J. Nola and B. Wellman. "Sousveillance: Inventing and Using Wearable Computing Devices for Data Collection in Surveillance Environments". *Surveillance and Society*. Vol.1. No.3 2002, p. 331-55, doi:org/10.24908/ss.v1i3.3344

Padmanabhan, Manjula. *The Island of Lost Girls*. Hachette India, 2015.

Zuboff, Shoshana. *In The Age of the Smart Machine: The Future of Work and Power*. Basic Books, 1988.

A Study of Trauma in Graphic Novels

Lakshmi.G.Menon

Abstract

This research paper aims at analyzing how the theme of trauma is being represented through graphic novels. Unlike conventional novels, this genre relies on pictures/ panels for narrating a story. Traumatic situations are lucidly portrayed through the medium of pictures. *Maus* depicts the Holocaust experiences of Jews in Poland and *Persepolis* narrates the story of a girl in a war torn Iran. The anthropomorphic representation of characters in *Maus* further heightens the racist feelings prevalent in Germany and Poland in the 1940s. The deranged condition of the protagonist is realistically depicted through the pictures in *Persepolis*. Panels convey the sense of identity crisis faced by the characters in both books better than words. The idea that a picture speaks better than a thousand words is clearly demonstrated through the graphic novels.

Keywords. Graphic novel, trauma, panel, anthropomorphism, Holocaust

As children, all of us must have been fascinated reading Amar Chitra Katha and stories of heroes like Phantom, Tarzan, Batman and Superman. These books were categorized as comics and meant for light reading. Graphic Novels may be considered as more serious versions of the



കേരളീയ നവോത്ഥാനം

സാഹിത്യത്തിലും സാമൂഹികനീർമ്മിതിയിലും



എഡിറ്റർ: സിസ്റ്റർ ഡോ. ഷീബ ഐ.സി.

കേരളീയ നവോത്ഥാനം

സാഹിത്യത്തിലും സാമൂഹികനീർമ്മിതിയിലും

എഡിറ്റർ:

സിസ്റ്റർ ഡോ. ഷീബ ഐ.സി.

കേരളീയ നവോത്ഥാനത്തിന്റെ സ്വപനസമയങ്ങൾ പരിച അറിന്റെ മേഖലാണ്. അതിന്റെ പ്രാദേശങ്ങൾക്കകത്തു എഴുതേണ്ട പുസ്തകങ്ങളിൽ ഹിന്ദി കഥകളും സാഹിത്യങ്ങളും സാമൂഹികനീർമ്മിതികളും നവോത്ഥാനത്തിന്റേതാണ്. വലിയ പാഠശാലകളും യാഥാസ്ഥാനികവും, പ്രസിദ്ധരായ നവോത്ഥാപകന്മാർ, സി.കെ.പി. വലിയ ന. പി. അയ്യപ്പൻ, ചാലക്കയിൽ അയ്യപ്പൻ, പി. പി. മുരളിപ്പാർ, കെ.വ.പി.യുടെയും കൃഷ്ണമൂർത്തിയുടെയും സഹായത്തോടെയും സാഹിത്യരചനകളും സാഹിത്യനരീഷികളുടെയും സഹായത്തോടെയും നവോത്ഥാനത്തിന്റെ ദീർഘകാലത്താണ്. അവയെ അറിയാനാഗ്രഹിക്കുന്നവർക്കു ഏതുവേലാപരമാണ് ഈ പുസ്തകം.

Kerala Sahitya Akademi
എഴുത്തുകാരുടെ അക്കാദമി
 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100
 125, 130
 ISBN 978-81-8838-97-0

അനുഭവനിർമ്മിതിയും കേരളീയ നവോത്ഥാനവും 51
ജിൻസി. കെ.

നവോത്ഥാന സങ്കല്പങ്ങൾ 54
സുമിത പി.കെ.

മാനവികത കാര്യർക്കഥകളിൽ 58
ജോഫി റാഫി

നവോത്ഥാന കുടുംബസങ്കല്പം
സരസ്വതിയമ്മയുടെ കഥകളിൽ 61
രമ്യ പി.ഒ.

നവോത്ഥാന ചിന്തകൾ
സി.അയ്യപ്പന്റെ മുഖപ്രസംഗങ്ങളിൽ 64
ലിറ്റി പയസ്

മലയാള സാഹിത്യ നവോത്ഥാനത്തിന്റെ
നാൾവഴികൾ 67
അനു വി.എസ്.

ജാതിസമൂഹത്തെ അപനിർമ്മിച്ച
നവോത്ഥാന തൂലിക 74
മോല രാധാകൃഷ്ണൻ

ആധുനിക കേരളീയ സ്ത്രീസ്വത്വനിർമ്മിതിയിൽ
ആദ്യകാല സ്ത്രീമാസികകളുടെ പങ്ക് 78
ആതിര കെ.

നവോത്ഥാനമൂല്യങ്ങൾ ദേശകവിതകളിൽ 83
സിജി എം.വി. (സി. പ്രഭാ തെരേസ്)

Philosophical contributions of
Fr. Kuriakose Elias Chavara to the
renaissance of Kerala 89
Dr. Justin P.G.

Portrayal of the victorian society
in 'Great expectations' by Charles Dickens 93
Akhila Maria A I

മലയാള സാഹിത്യ നവോത്ഥാനത്തിന്റെ നാൾവഴികൾ

(ആദ്യകാല പത്ര-സാഹിത്യ മാസികകളെ ആസ്പദമാക്കി ഭരണവർഷണം)

അനു വി.എസ്.

മലയാളസാഹിത്യത്തിന്റെ വളർച്ചയിലും നവോത്ഥാനപാതയിലും ഗണ്യമായ പങ്കാണ് ആദ്യകാലപത്രമാസികകൾ നിർവഹിച്ചിട്ടുള്ളത്. ഭാഷയുടെയും സാഹിത്യത്തിന്റേയും മനുഷ്യകുലത്തിന്റേയും ഉണർച്ചയ്ക്കും ഉയർച്ചയ്ക്കും പ്രത്യക്ഷപ്പെട്ട ലേഖനങ്ങൾ നവോത്ഥാനത്തെ പൂർണ്ണമായും പിന്തുണച്ചിരുന്നു.

ആദ്യകാല പത്രമാസികകളും സാഹിത്യനവോത്ഥാനവും

സമൂഹത്തിലും ഭരണതലത്തിലും എന്തുനടക്കുന്നു എന്നറിയിക്കുകയും എന്താണ് നടത്തേണ്ടതെന്ന് ഉണർത്തി സമൂഹാവബോധം തുപപ്പെടുത്തുകയും സമൂഹത്തിലേക്കും ചെയ്യുക എന്ന വലിയ കൃത്യത്തിനുള്ള പേരാണ് പത്രധർമ്മം. ഫ്യൂഡൽ പ്രഭുത്വവാഴ്ചയുടെ ജീർണതകൾക്കെതിരെയായി പത്രപ്രവർത്തനം ആവിർഭവിച്ചത്. ഈ ലക്ഷ്യത്തെ പിൻതുടർന്നുകൊണ്ട് തന്നെയാണ് മാസികകളും കേരളത്തിൽ പുറത്തുവന്നത്. പത്രപ്രവർത്തനരംഗവുമായി പരിചയമുണ്ടായിരുന്ന പാശ്ചാത്യ മിഷണറിമാർ ഇന്ത്യയിലെ പല ഭാഷകളിൽ ആനുകാലികങ്ങൾ ആരംഭിച്ചതിലൊരു ഭാഷയാണ് മലയാളം. ഗുണ്ടർട്ടിന്റെ നേതൃത്വത്തിലുള്ള ബാസൽ മിഷനാണ് മലയാളത്തിലാദ്യമായി ആനുകാലികങ്ങൾ പ്രസിദ്ധീകരിച്ചതുടങ്ങിയത്. തലശ്ശേരിയിൽ നിന്ന് പ്രസിദ്ധീകരിച്ച മലയാളപഞ്ചാംഗമാണ് (1846) ആദ്യത്തെ ആനുകാലികമെന്ന് പറയുന്നുണ്ടെങ്കിലും ഇന്ന് അതിന്റെ പ്രതികൾ ലഭ്യമാകാത്തതുകൊണ്ട് കൂടുതൽ വിവരങ്ങൾ അറിയാൻ സാധിക്കുന്നില്ല.

രാജ്യസമാചാരം

മലയാള ആനുകാലികങ്ങളിൽ ആദ്യത്തേത് എന്ന് വിശ്വസിക്കപ്പെടുന്നത് രാജ്യസമാചാരമാണ്. ബാസൽ മിഷനുവേണ്ടി 1847ൽ ഗുണ്ടർട്ടിന്റെ

കേരള സർക്കാർ
സംസ്ഥാനങ്ങളും സാഹിത്യകർമ്മങ്ങളിലും

കാലയളവ് അത് രാജ്യസമാചാരം എന്ന പുതുമാസിക പുറത്തിറങ്ങി
യത് ("രാജ്യസമാചാരം" എന്ന പേര്, ദൈവരാജ്യമാണ് 'രാജ്യം' കൊണ്ട്
ഉദ്ദേശിക്കുന്നത്) ഇളക്കിക്കളഞ്ഞിന്റെ നല്ല പങ്കും മതപരമായ പ്രവർത്തന
ങ്ങൾക്കു നീക്കിവച്ചിട്ടുണ്ടെന്നതിലും ഭൂമിശാസ്ത്രം, പൊതുവിജ്ഞാനം,
കലാപരം, പാഠശാസ്ത്രങ്ങൾ തുടങ്ങിയ മതേതരവിഷയങ്ങളും അതിൽ
വന്നിട്ടുണ്ടെന്നുകൊണ്ടാണ്.

പ്രാർത്ഥനാസമയത്ത്, 'പ്രാർത്ഥനാസമയം സമാധാനം' എന്ന ലേഖന
ത്തിൽ, ഇംഗ്ലീഷ് മിഷണറി ചെയ്ത പ്രവർത്തനങ്ങളെക്കുറിച്ചും ദാമനാഥ
ദാശോർ രാജ്യസമാചാര സന്ദർശിച്ചു നടത്തിയ 'പാപ്പയും ബ്രഹ്മണനും'
എന്ന വിവരണത്തെക്കുറിച്ചും ഈ മാസികയിൽ പറയുന്നുണ്ട്.
സാംസ്കാരികരാജ്യത്ത് മാത്രമല്ല സാഹിത്യരംഗത്തിലും പുത്തൻ ഉണർവ്വു
കൾ കൊണ്ടുവരാൻ രാജ്യസമാചാരത്തിന് സാധിച്ചിട്ടുണ്ട്. ജനകീയ
രാഷ്ട്രാഭിമാനത്തിന്റെ അങ്കുരങ്ങൾ ഈ മാസികയിൽ കാണാം

മതപരമാണെന്നു എന്ന ലക്ഷ്യമായിരുന്നു രാജ്യസമാചാരപ്രസിദ്ധി
കരണത്തിനു പിന്നിൽ. സാഹിത്യരൂപം നോക്കുമ്പോൾ ജനകീയ
രാഷ്ട്രാഭിമാനമാണ് ഉപയോഗിച്ചിട്ടുള്ളത്. ഇന്നത്തെ രാഷ്ട്രാഭിമാന
രാജ്യസമാചാരത്തിലെ രാഷ്ട്രാഭിമാനത്തിന്റെ ക്രമാനുഗതമായ വളർച്ചയെ
യാണ് സൂചിപ്പിക്കുക.

പശ്ചിമോദയം

'രാജ്യസമാചാര'ത്തിന്റെ കനിഷ്ഠ സഹോദരസ്ഥാനമാണ് 1847
ഒക്ടോബറിൽ പ്രസിദ്ധീകരിച്ചു തുടങ്ങിയ 'പശ്ചിമോദയ'ത്തിനുള്ളത്.
രാജ്യസമാചാരത്തെ പോലെ "പശ്ചിമോദയത്തിന്റെ ചുക്കാൻ പിടിച്ചതും
ഗുണ്ടർട്ടിന്റെ അഭ്യൂഹസ്തങ്ങൾ തന്നെയാണെന്ന് സംശയമേൽക്കുമന്യ
പറയാം" എന്ന് ജി. പ്രിയദർശനൻ അഭിപ്രായപ്പെടുന്നുണ്ട്. പൊതു
വിജ്ഞാനത്തിൽ ജനങ്ങളെ ഉദ്ബുദ്ധരാക്കുക, വെളിച്ചം പാശ്ചാത്യരാജ്യ
ങ്ങളിൽനിന്നു പുറപ്പെടുന്നു എന്നു വ്യക്തമാക്കുക, ശാസ്ത്രബോധ
ത്തിനു യുറോപ്പാണു മുൻപന്തിയിലെന്നു വ്യക്തമാക്കുക തുടങ്ങിയ
ലക്ഷ്യങ്ങളാണ് പശ്ചിമോദയത്തിന്റെ പ്രസിദ്ധീകരണത്തിന്റെ പിന്നിൽ
പ്രവർത്തിച്ചത്.

ജ്യോതിഷവിദ്യ, കേരളപഴമ, ഭൂമിശാസ്ത്രം തുടങ്ങിയ വിഷയങ്ങളെ
സംബന്ധിച്ചു ലഘുലേഖനങ്ങൾ വെളിച്ചം കണ്ടത് പശ്ചിമോദയത്തി
ലൂടെയായിരുന്നു. ജ്യോതിഷശാസ്ത്രത്തിലെ പല തരം അന്ധവിശ്വാസ
ങ്ങളെ പശ്ചിമോദയത്തിൽ തള്ളിക്കളയുന്നുണ്ട്. മതേതരസ്വഭാവം ഉള്ളതു
കൊണ്ട് തന്നെ ക്രിസ്ത്യാനികളുടെ ഇടയിൽ മാത്രമല്ല, ഹിന്ദുക്കൾക്കിട
യിലും പശ്ചിമോദയത്തിന് പ്രചാരം ഉണ്ടായിരുന്നു. സാഹിത്യത്തിലെ
വൈജ്ഞാനികശാഖയ്ക്ക് തുടക്കം കുറിച്ചത് പശ്ചിമോദയത്തിലൂടെ
യായിരുന്നു.

ജ്ഞാനനിക്ഷേപം

ഓ. ജോർജ്ജ് മാത്തന്റെ നേതൃത്വത്തിൽ ഇളക്കിമാറ്റാവുന്ന ആധുനിക ഉപയോഗിച്ച് കൃഷി ചെയ്ത മലയാളത്തിലെ ആദ്യ ആനുകൂല്യമാണ് ജ്ഞാനനിക്ഷേപം. ആധുനിക പത്രമാസികകളുടെ അടിസ്ഥാനമാണ് ജ്ഞാനനിക്ഷേപം. മാസികയുടെ ഉദ്ദേശലക്ഷ്യം ഒന്നാം ലക്ഷ്യത്തിൽ മുഖവുരയിൽ പറഞ്ഞുവെക്കുന്നുണ്ട്. സ്വദേശവർത്തമാനങ്ങളും പരദേശവർത്തമാനങ്ങളും, പല തരം ചികിത്സകളെക്കുറിച്ചും വിദ്യാഭ്യാസംകൊണ്ട് സംസ്ഥാനത്തെ തനിച്ചുള്ള മര്യാദകളെക്കുറിച്ചുമുള്ള കൃഷിക്കാരുടെയും ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിൽ ഉൾക്കൊള്ളിച്ചിരിക്കുന്നത്. കൂടാതെ മലയാള സാഹിത്യത്തിലെ പല പ്രസ്ഥാനങ്ങൾക്കും തുടക്കം കുറിച്ച കൃതികൾ പുറത്തു വന്നത് 'ജ്ഞാനനിക്ഷേപ'ത്തിലാണ്.

മലയാള നോവൽ പ്രസ്ഥാനത്തിന് തുടക്കം കുറിച്ച 'പുല്ലേലി കുഞ്ചു', മലയാളത്തിന്റെ പ്രഥമനോവലായ അപ്പു നെടുങ്ങാടിയുടെ 'കുന്ദലത്', മലയാളത്തിലെ ചെറുകഥാപ്രസ്ഥാനത്തിന് തുടക്കമിട്ട 'ആനയെയും മനുഷ്യനും കുറിച്ച' (1849) എന്ന ശീർഷകത്തിലുള്ള കഥയും മനുഷ്യൻ, ഭാഷ, എഴുത്ത് എന്നിങ്ങനെയുള്ള ആദ്യകാല ഉപന്യാസ തുടങ്ങിയ ശാസ്ത്രലേഖനങ്ങളും 'സംവാദനം' എന്ന ആദ്യത്തെ ഗ്രന്ഥ നിരൂപണവും പുറത്തുവന്നത് ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിലൂടെയാണ്. കൂടാതെ പത്രമാസികകളുടെ തുടക്കം എന്നോണം ലക്കം, നമ്പർ, വിഷയ വിവരം തുടങ്ങിയ വിവരങ്ങൾ നൽകാൻ തുടങ്ങിയതും ഈ മാസികയായിരുന്നു.

പക്ഷതയാർന്ന ഒരു ഗദ്യശൈലിയും സംസ്കൃതപദപ്രചുരവും ആധുനികമലയാളശൈലിയുടെ വികാസവും ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിലൂടെയാണ് വളർന്നത്. വാർത്തകൾക്ക് പ്രാധാന്യം നൽകിക്കൊണ്ട് പുറത്തിറക്കിയ ആദ്യത്തെ വർത്തമാനപത്രമെന്ന പദവിയും ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിന് നൽകാവുന്നതാണ്.

പശ്ചിമതാരക

1864ൽ പോൾമെൽവിൻ വാക്കർ സായ്പ്, കുര്യൻ റൈട്ടർ, ഇട്ടേർ റൈട്ടർ, ഇട്ടുപ്പ് റൈട്ടർ എന്നിവരുടെ നേതൃത്വത്തിൽ പുറത്തിറങ്ങിയ 'വെസ്റ്റേൺസ്റ്റാൻഡിംഗ്'ന്റെ മലയാള പതിപ്പാണ് 'പശ്ചിമതാരക'. മതപ്രചരണത്തേക്കാളധികം സാഹിത്യലേഖനങ്ങൾക്കും ഗ്രന്ഥവിമർശനങ്ങൾക്കും പശ്ചിമതാരക പ്രത്യേകപ്രാധാന്യം നൽകിയിരുന്നു. ഉമ്മൻ ഫിലിപ്പോസിന്റെ 'അമരകോശപ്രദീപിക' തുടങ്ങിയ കൃതികൾ ഖണ്ഡശഃ പ്രസിദ്ധീകരിച്ചതും ഷേക്സ്പിയറിന്റെ 'കോമഡി ഓഫ് എറോൾസ്' എന്ന നാടകത്തിന്റെ പരിഭാഷയായ 'ആൾമാറാട്ടം' പ്രസിദ്ധീകരിച്ചതും പശ്ചിമതാരകയിലാണ്.

കേരളീയ നവോത്ഥാനം
സാഹിത്യത്തിലും സാമൂഹികനീക്കത്തിലും

സാഹിത്യമാസികകളും നവോത്ഥാനവും

മലയാളത്തിലെ ആദ്യകാലമാസികകളിൽ കൂടുതലും സാഹിത്യ പ്രചരണത്തേക്കാൾ മതപ്രചാരണമായിരുന്നു ലക്ഷ്യം വെച്ചിരുന്നത്. എന്നാൽ 19-ാം നൂറ്റാണ്ടോടുകൂടി സാഹിത്യപ്രധാനികളായ മാസികകൾ മലയാളത്തിൽ അച്ചടിച്ചു വരുവാൻ തുടങ്ങി. 20-ാം നൂറ്റാണ്ടായപ്പോഴേക്കും ഇത്തരം പ്രസിദ്ധീകരണങ്ങൾക്ക് മലയാള പത്രരംഗത്ത് സുപ്രധാനമായ സ്ഥാനം ലഭിച്ചു.

വിദ്യാവിലാസിനി

1881ൽ തിരുവനന്തപുരത്ത് പുറത്തുവന്ന വിദ്യാവിലാസിനിയാണ് കേരളത്തിലെ ഒന്നാമത്തെ സാഹിത്യ മാസിക. വിശാഖം തിരുന്നാൾ മഹാരാജാവ്, ദിവാൻ രജസാമി, കേരളവർമ്മ വലിയകോയിതമ്പുരാൻ, പി. ഗോവിന്ദപിള്ള എന്നിവരുടെ പിന്തുണയോടെയാണ് ഈ മാസിക പുറത്തു വന്നത്. ഭാഷാചരിത്രം, ഭൂമിശാസ്ത്രം, കൃഷിശാസ്ത്രം, വിദ്യാഭ്യാസനിയമങ്ങൾ, യന്ത്രസംബന്ധമായ ശാസ്ത്രം, മൃഗചരിത്രം തുടങ്ങി ഒട്ടനവധി വിഷയങ്ങൾ പ്രസിദ്ധീകരിച്ച ഈ മാസിക ജനങ്ങളുടെ അറിവ് വർദ്ധിപ്പിക്കുന്നതിനുള്ള ഉപാധിയായിരുന്നു. കേരളവർമ്മയുടെ ശാക്തള വിവർത്തനം കേരളീയജനത കണ്ടതും (കേരളകാളിദാസൻ എന്ന പേരു വീണത് ഈ കൃതിയിലൂടെയാണ്), വിശാഖം തിരുന്നാൾ തയ്യാറാക്കിയ അലക്സാണ്ടർ, അരിസ്റ്റോട്ടിൽ, ആർക്കിമിഡീസ് തുടങ്ങിയ ഒട്ടനവധി മഹാനായരുടെ ഇംഗ്ലീഷിലുള്ള ജീവചരിത്രകുറിപ്പുകളുടെ പ്രകാശനവും മലയാള ചെറുകഥയുടെ പ്രഥമാങ്കുരമെന്ന് വിശേഷിപ്പിച്ച 'കല്ലൻ' എന്ന കഥയും വിദ്യാവിലാസിനിയിൽ അച്ചടിച്ചു വന്നതാണ്. ജാതി വ്യവസ്ഥ കൊടുമ്പിരി കൊണ്ടിരുന്ന കേരളത്തിലെ ജനങ്ങൾക്ക് സവർണ്ണ - അവർണ്ണ വ്യത്യാസമില്ലാതെ ഏതു എഴുത്തുകാരന്റേയും സാഹിത്യകൃതികൾ പ്രസിദ്ധീകരിക്കുവാനുള്ള ചങ്കുറ്റം കാണിച്ചത് വിദ്യാവിലാസിനിയാണ്.

വിദ്യാവിനോദിനി

1887-ൽ തൃശ്ശൂരിൽ നിന്ന് സി.പി.അച്യുതമേനോന്റെ നേതൃത്വത്തിൽ പുറത്തുവന്ന സാഹിത്യമാസികയാണ് വിദ്യാവിനോദിനി. സാഹിത്യം, ശാസ്ത്രം, ചരിത്രം തുടങ്ങിയ വിവിധ വിഷയങ്ങളെക്കുറിച്ചുള്ള പ്രബന്ധങ്ങൾക്കും അച്യുതമേനോൻ വിദ്യാവിനോദിനിയിൽ സ്ഥലം നൽകിയിരുന്നു. ഭാഷയെ സംസ്കൃതാധിപത്യത്തിൽ നിന്ന് മോചിപ്പിക്കുന്നതിനും നിഷ്പക്ഷമായ നിരൂപണം മുന്നോട്ടു കൊണ്ടുവരുന്നതിനും വേണ്ടി വിദ്യാവിനോദിനി തുടക്കം കുറിച്ചു. സംസ്കൃതജ്ഞാനമില്ലാതിരുന്ന ജനങ്ങൾക്ക് അറിയുവാനായി നായികാദിലക്ഷണം, നായകലക്ഷണം, ശൃംഗാരരസം തുടങ്ങിയ ശീർഷകങ്ങളിൽ പല ഉപന്യാസങ്ങൾ അദ്ദേഹം തയ്യാറാക്കി. കൂടാതെ കുണ്ടൂരിന്റെ 'മാളവികാഗ്നിമിതം'

പുറത്തിരുത്തി തന്മൂലം 'ലക്ഷണോസംഗം', 'വിപ്രകരോർവൃശീയം', 'സുന്ദരസരസീവരം', തുടങ്ങിയ ആദ്യകാലത്തെ നാടകങ്ങളിലെ പുത്തൻ രചനാശൈലികളെ ജനസമക്ഷം കാണിച്ചുവെക്കാനായി വിദ്യാവിനോദിനിയായിരുന്നു. ഏ.ആർ.ന്റെ 'ഭാഷാപ്രകാശം', 'മലയാളഭാഷ' എൻ. രാമകൃഷ്ണന്റെ 'ചരിത്രം', 'മലയാളഭാഷ', ആദ്യത്തെ ലക്ഷണമാതൃകയായ 'വാസനാവികൃതി', 'കേസരി' എന്ന നർമ്മ പ്രധാനമായ ലേഖനങ്ങളുടെ സമാഹാരവും വിദ്യാവിനോദിനിയെ മാത്രമല്ല മലയാളസാഹിത്യത്തെയുമാണ് സമ്പന്നമാക്കിയത്. "വിദ്യാവിനോദിനിക്കുശേഷം ഇവിടെ നൂറു കണക്കിനു മാസികകൾ ഉദയം ചെയ്തു; അസ്തമിച്ചു. എന്നാൽ കൈരളിക്ക് ഒരിക്കലും മറക്കാൻ കഴിയാത്ത കരുത്തുറ്റ സംഭാവനകൾ-വിശേഷിച്ചും ഗദ്യസാഹിത്യത്തിന്-നൽകിയിട്ട് മൺമറഞ്ഞ വിദ്യാവിനോദിനി നിത്യസ്മരണീയമായിരിക്കും."

കവനോദയം

1896-ൽ കടത്തനാട്ട് ഉദയവർമ്മ തമ്പുരാൻ പുറത്തിറക്കിയ സാഹിത്യമാസികയാണ് 'കവനോദയം'. 'ഭാരതംചമ്പു', 'രാമായണംചമ്പു', 'ചന്ദ്രോത്സവം', 'ഭൃംഗസന്ദേശം', 'ഭാഷാകർണാമൃതം' മുതലായ സാഹിത്യശാഖയുടെ മുതൽകൂട്ടായ കൃതികളും കൃഷ്ണഗാഥയുടെ കർത്താവ് എന്ന നിലയിൽ പലതരം നവീന അഭിപ്രായങ്ങളും മൂലം കൊണ്ടത് കവനോദയത്തിലൂടെയായിരുന്നു. ഉദയവർമ്മ തമ്പുരാന്റെ വിവർത്തനകൃതികളായ രത്നാവലി, പ്രിയദർശിനി, ഗവേഷണപരമായ 'കവികലാപം' എന്ന ലേഖന പരമ്പര തുടങ്ങിയതും കവനോദയത്തിൽ വെച്ച് ആയിരുന്നു. 16 കൊല്ലത്തോളമാണ് ഈ മാസിക പ്രസിദ്ധീകരിച്ചത്.

ഭാഷാപോഷിണി

കണ്ടത്തിൽ വർഗ്ഗീസ് മാപ്പിളയുടെ പുത്രാധിപത്യത്തിൽ പുറത്തുവന്ന പതൂർമാസികയാണ് ഭാഷാപോഷിണി (1892). പദ്യശാഖയേക്കാൾ ഗദ്യയുടെ ഓഫീസിൽ സാഹിത്യകാരന്മാർ യോഗം ചേർന്ന 'കവിസമാജ'മാണ് ഭാഷാപോഷിണിയുടെ ഉത്ഭവത്തിന് കാരണമായത്.

മൂന്നു പ്രവിശ്യകളായിരുന്ന കേരളത്തിന്റെ സംസ്കാരത്തെക്കുറിച്ചും വൈജ്ഞാനികമേഖലകളെക്കുറിച്ചും ഭാഷയുടെയും സാഹിത്യത്തിന്റെയും വളർച്ചയെക്കുറിച്ചുമുള്ള പലതരം പ്രസിദ്ധീകരണങ്ങൾക്ക് ഭാഷാപോഷിണി സഹായകമായി സാഹിത്യം, ഭാഷാശാസ്ത്രം, ചരിത്രം, വിദ്യാഭ്യാസം, ശാസ്ത്രസാങ്കേതികവിജ്ഞാനീയങ്ങൾ, ജീവചരിത്രങ്ങൾ തുടങ്ങിയ വിവിധ വിഷയങ്ങളിലുള്ള പ്രബന്ധങ്ങൾ ഭാഷാപോഷിണി

കേരളീയ നവോത്ഥാനം
സാഹിത്യത്തിലും സാമൂഹികനീർമ്മിതിയിലും

പ്രസിദ്ധീകരിച്ചു. 'കേരളപാണിനീയ'ത്തെ കുറിച്ചുള്ള ശേഷഗിരി പ്രഖ്യാപനത്തിൽ വിമർശനാത്മകമായ ലേഖനപരമ്പരകൾ മലയാളികൾക്ക് ഭാഷാ വ്യാകരണത്തെ കുറിച്ച് ഒരു ധാരണ ലഭിക്കുവാൻ സഹായകമായി ഉള്ളൂർ എസ്. പരമേശ്വരയ്യരുടെ 'നമ്മുടെ ഗദ്യമെഴുത്തുകൾ' എന്ന ലേഖനത്തിൽ മലയാളത്തിലെ ഗദ്യരചയിതാക്കളെ ആംഗലേയസാഹിത്യ കാരന്മാരോട് താരതമ്യപ്പെടുത്തിയപ്പോൾ യൂറോപ്യൻ സാഹിത്യ ജനങ്ങളിലേക്ക് എത്തിക്കുവാനുള്ള വഴിയാണ് തുറന്നിട്ടത്. (ഏ.ആർ. എ.മേഴ്സൺ, സി.വി.രാമൻപിള്ള-വാൾട്ടർ സ്കോട്ട്, സി.പി.അച്യുത മേനോൻ-മെക്കാളെ മുതലായവർ) ആശാന്റെ 'സിംഹപ്രസവം' എന്ന കവിത, മർക്കോത്ത് കുമാരന്റെ 'അന്യഥാ ചിന്തിതം കാര്യം ദൈവമന്യുന ചിന്തയത്' (മലയാളത്തിലെ ആദ്യത്തെ ലക്ഷണമൊത്ത ചെറുകഥ) എന്ന നോവലുകളും, ഷേക്സ്പിയറിന്റെ 'മാക്ബത്ത്', 'ലോകാപവാദം' 'ബാലാങ്കണം' തുടങ്ങിയ നാടകവിവർത്തനങ്ങളും ഈ മാസികയുടെ മുതൽകൂട്ടുകളിൽ ചിലതാണ്. സാഹിത്യത്തിന്റെ മേഖലകൾ ഇന്നും തുറന്നുകാട്ടുന്ന മാസിക കൂടിയാണ് ഭാഷാപോഷിണി.

രസികരഞ്ജിനി

1903-ൽ അപ്പൻ തമ്പുരാന്റെ നേതൃത്വത്തിൽ തൃശ്ശൂരിൽ നിന്ന് പ്രസിദ്ധീകരണമാരംഭിച്ച മാസികയാണ് 'രസികരഞ്ജിനി'. രാജ്യഭരണ വിഷയങ്ങൾ തീർത്തും ഒഴിവാക്കി കൊണ്ട് സാഹിത്യത്തിനും ശാസ്ത്രത്തിനും പ്രാധാന്യം നൽകി പ്രസിദ്ധീകരിച്ച മാസിക കൂടിയാണിത്. മലയാളത്തിലെ ആദ്യ ഡിറ്റക്ടീവ് നോവലായ അപ്പൻ തമ്പുരാന്റെ 'ഭാസ്കരമേനോൻ', മർക്കോത്ത് കുമാരന്റെ 'കാകൻ' എന്ന കഥ, സി.എസ്. സുബ്രഹ്മണ്യൻ പോറ്റിയുടെ 'ഒരു വിലാപം' എന്ന വിലാപ കാവ്യം, 'ഉണ്ണുന്നീലിസന്ദേശം', 'ലീലാതിലകം' തുടങ്ങിയ പ്രശസ്ത കൃതികളും സഹൃദയസമക്ഷം എത്തിച്ചത് രസികരഞ്ജിനിയിലൂടെയായിരുന്നു.

കവനകൗമുദി

"പൂർണ്ണമായും കവിതാമയമായി പ്രസിദ്ധീകരിക്കപ്പെട്ട ഭാരതത്തിലെ ഏക ആനുകാലിക പ്രസിദ്ധീകരണമാണ് കവനകൗമുദി." പന്ത്രണ്ടു കേരള വർമ്മയുടെ പത്രാധിപത്യത്തിലായിരുന്നു ഈ മാസിക പുറത്തു വന്നത്. പ്രാദേശിക വാർത്തകൾ, പുസ്തകങ്ങൾ കൈപ്പറ്റിയ വിവരം, പരസ്യങ്ങൾ, മുഖപ്രസംഗങ്ങൾ തുടങ്ങിയ എല്ലാ ഇനങ്ങളും പദ്യത്തിൽ തന്നെയാണ് ചേർത്തിരിക്കുന്നത്. വള്ളത്തോളിന്റേയും, ഉള്ളൂരിന്റേയും ലിഖിതങ്ങളും ഒട്ടനവധി കൃതികൾ പ്രസിദ്ധീകരിക്കപ്പെട്ട മാസിക എന്ന ഖ്യാതിയും കവനകൗമുദിക്ക് അവകാശപ്പെടാം.

"മലയാളത്തിൽ പദ്യരചനാപാടവത്തിന്റെ അഭിവൃദ്ധി അറിയാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നവർ ഇതിനെ മാനദണ്ഡമായി എടുത്തുനോക്കുന്നതിൽ

അമ്പലമില്ല" എന്ന് വിവേകോദയത്തിൽ കൂമാരനാശാനും പറഞ്ഞു വെക്കുന്നുണ്ട്. 'സ്വദേശാഭിമാനി', 'കേസരി', 'വിവേകോദയം', 'ഗ്രന്ഥാലോകം', 'ശ്രീമതി' തുടങ്ങിയ മാസികകളും ലോകം നിഷേധിക്കപ്പെട്ട ഒരു ജനതയ്ക്ക് മുമ്പിൽ അറിവിന്റെ വാതായനങ്ങൾ തുറന്നു. സാഹിത്യത്തിന്റെ പദ്യഗദ്യമേഖലയ്ക്ക് പുത്തൻ പ്രവണതകൾ സമ്മാനിക്കുകയും അന്ധവിശ്വാസങ്ങളെ നിർമ്മാർജ്ജനം ചെയ്യുകയും ശാസ്ത്രസാങ്കേതിക മേഖലകൾ ജനങ്ങൾക്ക് പരിചയപ്പെടുത്തുകയും ചെയ്ത ഈ മാസികകളെല്ലാം തന്നെ മലയാള സാഹിത്യശാഖയുടെ പുത്തൻ താരോദയത്തിന് വഴി വെട്ടി തെളിക്കുകയാണ് ഉണ്ടായത്. ഇന്നും ജനങ്ങൾക്കിടയിലുള്ള അന്ധവിശ്വാസങ്ങളെയും ഉച്ചനീചത്വങ്ങളെയും സാഹിത്യത്തിലെ പുതിയ താരോദയങ്ങളെയും പരിചയപ്പെടുത്തുന്നതിനുള്ള ഒരു ഉപാധിയായി മാസികകൾ മാറേണ്ട കാലം അതിക്രമിച്ചിരിക്കുന്നു.

പുതിയ കാലത്തേക്കുള്ള ഭാഷയുടെ വളർച്ചയിൽ ഇത്തരം സാഹിത്യ മാസികകൾ വഹിച്ച പങ്കാണ് പിൽക്കാലത്ത് പുരോഗമനാശയങ്ങളുടെയും നവോത്ഥാനചിന്തകളുടെയും കാതലായി വർത്തിച്ചത്.

അസിസ്റ്റന്റ് പ്രൊഫസർ (Govt. Guest)
മലയാളവിഭാഗം
കാർമ്മൽ കോളേജ്, മാള

സഹായകഗ്രന്ഥങ്ങൾ

1. അച്യുതൻ. എം (പ്രൊഫ:), സ്വാതന്ത്ര്യസമരവും മലയാളസാഹിത്യവും, കറന്റ് ബുക്സ് തൃശ്ശൂർ, 1994.
2. കണ്ടത്തിൽ വർഗ്ഗീസ് മാപ്പിളയുടെ കൃതികൾ (ഒന്നാം വാല്യം) മനോമ പബ്ലിഷിംഗ് ഹൗസ് (സമ്പാ:), 1977
3. ചുമ്മാർ ടി.എം, ഭാഷാഗദ്യസാഹിത്യചരിത്രം, നാഷണൽ ബുക് സ്റ്റാൾ, 1979
4. ചെറിയാൻ കുനിയത്തോടത്ത് (ഡോ.), മലയാളഭാഷയും ഡോ. ഹെർമ്മൻ ഗുണ്ടർട്ടും, പി.കെ.ബ്രദേർസ്, കോഴിക്കോട്, 1997

ഭാവനയുടെ അരികും അതിരും



എഡിറ്റർമാർ:

ഡോ. നിധീഷ് കെ.പി.
പ്രൊഫ. വി. ലിസി മാത്യു



മലയാളവിഭാഗം
ശ്രീശങ്കരാചാര്യ സംസ്കൃതസർവ്വകലാശാല, കാലടി
പയ്യന്നൂർ പ്രാദേശികകേന്ദ്രം

ഉള്ളടക്കം

കാല്പനികത—മലയാളകവിതയിൽ പ്രൊഫ. എസ്. കെ. വസന്തൻ	9
കാല്പനികതയുടെ സൗന്ദര്യശാസ്ത്രം ഡോ. നന്ത്യത്ത് ഗോപാലകൃഷ്ണൻ	30
കാല്പനികതയുടെ മനഃശാസ്ത്രം ഡോ. വി. രാജീവ്	47
സൈന്യസ്വത്വത്തിന്റെ കാല്പനികഭാവങ്ങൾ സഹീറ തങ്ങളുടെ കവിതകളിൽ മുതാസ് പി.കെ.	56
കാല്പനികതയുടെ സ്വരാജ്യം ഇംഗ്ലീഷ് കാല്പനികതയുമായുള്ള ആശാന്റെ ബലപരീക്ഷണങ്ങൾ ആർ. ചന്ദ്രബോസ്	66
‘മനസ്സിനി’യിലെ കാല്പനിക പ്രവണത രമ്യ ആർ.	75
കാല്പനികത—മാധവിക്കട്ടിയുടെ കഥകളിൽ പാർവതി പി. ചന്ദ്രൻ	94
ഭാവനയുടെ പെൺലോകസഞ്ചാരങ്ങൾ: ബാലാമണിയമ്മയുടെ കവിതകളിൽ ദേവി കെ.	100
‘ജൈവ’ത്തിലെ പ്രതിബോധ കാല്പനികത ധീന പി.പി.	108
ബെന്യാമിന്റെ കഥകളിലെ കാല്പനികപ്രണയവും രതിയും അനു വി.എസ്.	116
കാല്പനികതയുടെ പാരഡിക്കാഴ്ചകൾ ദിൽഷ പി.കെ.	121
കാല്പനികതയുടെ ജൈവികഭാവനകൾ ഖസാക്കിന്റെ ഇതിഹാസത്തിൽ ഷംന രാജ് കെ.കെ.	134
പരമരാജനും, വി.ആർ സുധീഷും: പ്രണയത്തിന്റെ വേറിട്ട ആഖ്യാനങ്ങൾ രസ്ലിയ എം.എസ്സ്.	141

മലയാള സാഹിത്യ നവോത്ഥാനത്തിന്റെ നാൾവഴികൾ

(ആദ്യകാല പത്ര-സാഹിത്യ മാസികകളെ ആസ്പദമാക്കി ഭരണമന്ദിരം)

അനു വി.എസ്.

മലയാളസാഹിത്യത്തിന്റെ വളർച്ചയിലും നവോത്ഥാനപാതയിലും ഗണ്യമായ പങ്കാണ് ആദ്യകാലപത്രമാസികകൾ നിർവഹിച്ചിട്ടുള്ളത്. ഭാഷയുടെയും സാഹിത്യത്തിന്റെയും മനുഷ്യകുലത്തിന്റെയും ഉണർച്ചയ്ക്കും ഉയർച്ചയ്ക്കും പ്രത്യക്ഷപ്പെട്ട ലേഖനങ്ങൾ നവോത്ഥാനത്തെ പൂർണ്ണമായും പിന്തുണച്ചിരുന്നു.

ആദ്യകാല പത്രമാസികകളും സാഹിത്യനവോത്ഥാനവും

സമൂഹത്തിലും ഭരണതലത്തിലും എന്തുനടക്കുന്നു എന്നറിയിക്കുകയും എന്താണ് നടത്തേണ്ടതെന്ന് ഉണർത്തി സമൂഹാവബോധം തുപപ്പെടുത്തുകയും സമൂഹത്തിലേക്കും ചെയ്യുക എന്ന വലിയ കൃത്യത്തിനുള്ള പേരാണ് പത്രധർമ്മം. ഫ്യൂഡൽ പ്രഭുത്വവാഴ്ചയുടെ ജീർണതകൾക്കെതിരെയാണ് പത്രപ്രവർത്തനം ആവിർഭവിച്ചത്. ഈ ലക്ഷ്യത്തെ പിൻതുടർന്നുകൊണ്ട് തന്നെയാണ് മാസികകളും കേരളത്തിൽ പുറത്തുവന്നത്. പത്രപ്രവർത്തനരംഗവുമായി പരിചയമുണ്ടായിരുന്ന പാശ്ചാത്യ മിഷണറിമാർ ഇന്ത്യയിലെ പല ഭാഷകളിൽ ആനുകാലികങ്ങൾ ആരംഭിച്ചതിലൊരു ഭാഷയാണ് മലയാളം. ഗുണ്ടർട്ടിന്റെ നേതൃത്വത്തിലുള്ള ബാസൽ മിഷനാണ് മലയാളത്തിലാദ്യമായി ആനുകാലികങ്ങൾ പ്രസിദ്ധീകരിച്ചതുടങ്ങിയത്. തലശ്ശേരിയിൽ നിന്ന് പ്രസിദ്ധീകരിച്ച മലയാളപഞ്ചാംഗമാണ് (1846) ആദ്യത്തെ ആനുകാലികമെന്ന് പറയുന്നുണ്ടെങ്കിലും ഇന്ന് അതിന്റെ പ്രതികൾ ലഭ്യമാകാത്തതുകൊണ്ട് കൂടുതൽ വിവരങ്ങൾ അറിയാൻ സാധിക്കുന്നില്ല.

രാജ്യസമാചാരം

മലയാള ആനുകാലികങ്ങളിൽ ആദ്യത്തേത് എന്ന് വിശ്വസിക്കപ്പെടുന്നത് രാജ്യസമാചാരമാണ്. ബാസൽ മിഷനുവേണ്ടി 1847ൽ ഗുണ്ടർട്ടിന്റെ

കേരള സർക്കാർ
സംസ്ഥാനങ്ങളും സാഹിത്യകർമ്മങ്ങളിലും

കാലയളവ് അളവ് രാജ്യസമാചാരം എന്ന പുതുമാസിക പുറത്തിറങ്ങി
യത് ("രാജ്യസമാചാരം" എന്ന പേര്, ദൈവരാജ്യമാണ് 'രാജ്യം' കൊണ്ട്
ഉദ്ദേശിക്കുന്നത്) ഇളക്കേഴുന്നതിന്റെ നല്ല പങ്കും മതപരമായ പ്രവർത്തന
ങ്ങൾക്കു നീക്കിവെച്ചിട്ടുണ്ടെന്നതിലും ഭൂമിശാസ്ത്രം, പൊതുവിജ്ഞാനം,
കലാപരം, പാരമ്പര്യങ്ങൾ തുടങ്ങിയ മതേതരവിഷയങ്ങളും അതിൽ
വന്നിട്ടുണ്ടെന്നുകൊണ്ടാണ്.

പ്രാർത്ഥനാസമയത്ത്, 'പ്രാർത്ഥനാസമയം സമാധാനം' എന്ന ലേഖന
ത്തിൽ ഇംഗ്ലീഷ് മിഷണറി ചെയർ പ്രവർത്തനങ്ങളെക്കുറിച്ചും ദാമനാഥ
ദാശോർ രാജ്യസമാചാര സന്ദർശിച്ചു നടത്തിയ 'പാപ്പയും ബ്രഹ്മണനും'
എന്ന വിവരണത്തെക്കുറിച്ചും ഈ മാസികയിൽ പറയുന്നുണ്ട്.
സാംസ്കാരികരാജ്യത്ത് മാത്രമല്ല സാഹിത്യരംഗത്തിലും പുത്തൻ ഉണർവ്വു
കൾ കൊണ്ടുവരാൻ രാജ്യസമാചാരത്തിന് സാധിച്ചിട്ടുണ്ട്. ജനകീയ
രാഷ്ട്രാഭിമാനത്തിന്റെ അങ്കുരങ്ങൾ ഈ മാസികയിൽ കാണാം

മതപരമാണെന്നു എന്ന ലക്ഷ്യമായിരുന്നു രാജ്യസമാചാരപ്രസിദ്ധി
കരണത്തിനു പിന്നിൽ. സാഹിത്യരൂപം നോക്കുമ്പോൾ ജനകീയ
രാഷ്ട്രാഭിമാനമാണ് ഉപയോഗിച്ചിട്ടുള്ളത്. ഇന്നത്തെ രാഷ്ട്രാഭിമാന
രാജ്യസമാചാരത്തിലെ രാഷ്ട്രാഭിമാനത്തിന്റെ ക്രമാനുഗതമായ വളർച്ചയെ
യാണ് സൂചിപ്പിക്കുക.

പശ്ചിമോദയം

'രാജ്യസമാചാര'ത്തിന്റെ കനിഷ്ഠ സഹോദരസ്ഥാനമാണ് 1847
ഒക്ടോബറിൽ പ്രസിദ്ധീകരിച്ചു തുടങ്ങിയ 'പശ്ചിമോദയ'ത്തിനുള്ളത്.
രാജ്യസമാചാരത്തെ പോലെ "പശ്ചിമോദയത്തിന്റെ ചുക്കാൻ പിടിച്ചതും
ഗുണ്ടർട്ടിന്റെ അഭ്യൂഹസ്തങ്ങൾ തന്നെയാണെന്ന് സംശയമേൽക്കുമന്യ
പറയാം" എന്ന് ജി. പ്രിയദർശനൻ അഭിപ്രായപ്പെടുന്നുണ്ട്. പൊതു
വിജ്ഞാനത്തിൽ ജനങ്ങളെ ഉദ്ബുദ്ധരാക്കുക, വെളിച്ചം പാശ്ചാത്യരാജ്യ
ങ്ങളിൽനിന്നു പുറപ്പെടുന്നു എന്നു വ്യക്തമാക്കുക, ശാസ്ത്രബോധ
ത്തിനു യുറോപ്പാണു മുൻപന്തിയിലെന്നു വ്യക്തമാക്കുക തുടങ്ങിയ
ലക്ഷ്യങ്ങളാണ് പശ്ചിമോദയത്തിന്റെ പ്രസിദ്ധീകരണത്തിന്റെ പിന്നിൽ
പ്രവർത്തിച്ചത്.

ജ്യോതിഷവിദ്യ, കേരളപഴമ, ഭൂമിശാസ്ത്രം തുടങ്ങിയ വിഷയങ്ങളെ
സംബന്ധിച്ചു ലഘുലേഖനങ്ങൾ വെളിച്ചം കണ്ടത് പശ്ചിമോദയത്തി
ലൂടെയായിരുന്നു. ജ്യോതിഷശാസ്ത്രത്തിലെ പല തരം അന്ധവിശ്വാസ
ങ്ങളെ പശ്ചിമോദയത്തിൽ തള്ളികളയുന്നുണ്ട്. മതേതരസ്വഭാവം ഉള്ളതു
കൊണ്ട് തന്നെ ക്രിസ്ത്യാനികളുടെ ഇടയിൽ മാത്രമല്ല, ഹിന്ദുക്കൾക്കിട
യിലും പശ്ചിമോദയത്തിന് പ്രചാരം ഉണ്ടായിരുന്നു. സാഹിത്യത്തിലെ
വൈജ്ഞാനികശാഖയ്ക്ക് തുടക്കം കുറിച്ചത് പശ്ചിമോദയത്തിലൂടെ
യായിരുന്നു.

ജ്ഞാനനിക്ഷേപം

ഓ. ജോർജ്ജ് മാത്തന്റെ നേതൃത്വത്തിൽ ഇളക്കിമാറ്റാവുന്ന
ആധുനികമലയാളി കൂട്ടായ്മയായിട്ട് കൂടാതെ മലയാളത്തിലെ ആദ്യ ആനുകൂല്യ
ജ്ഞാനനിക്ഷേപം. ആധുനിക പത്രമാസികകളുടെ
മലയാളത്തിൽ മുഖവുരയിൽ പറഞ്ഞുവെക്കുന്നുണ്ട്. സ്വദേശവർത്തമാന
ങ്ങളും പരദേശവർത്തമാനങ്ങളും, പല തരം ചികിത്സകളെക്കുറിച്ചും
വിദ്യാഭ്യാസംകൊണ്ട് സംസ്ഥാനത്തെ തനിച്ചുള്ള മര്യാദകളെക്കുറിച്ചുമുള്ള
വിവരങ്ങളുമാണ് ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിൽ ഉൾക്കൊള്ളിച്ചിരിക്കുന്നത്.
കൂടാതെ മലയാള സാഹിത്യത്തിലെ പല പ്രസ്ഥാനങ്ങൾക്കും തുടക്കം
കുറിച്ച കൃതികൾ പുറത്തു വന്നത് 'ജ്ഞാനനിക്ഷേപ'ത്തിലാണ്.

മലയാള നോവൽ പ്രസ്ഥാനത്തിന് തുടക്കം കുറിച്ച 'പുല്ലേലി കുഞ്ചു',
മലയാളത്തിന്റെ പ്രഥമനോവലായ അപ്പു നെടുങ്ങാടിയുടെ 'കുന്ദലത്',
മലയാളത്തിലെ ചെറുകഥാപ്രസ്ഥാനത്തിന് തുടക്കമിട്ട 'ആനയെയും
മനുഷ്യൻ, ഭാഷ, എഴുത്ത് എന്നിങ്ങനെയുള്ള ആദ്യകാല ഉപന്യാസ
മാതൃകകളും തീക്കപ്പലുകൾ, വർത്തമാനസൂത്രകമ്പി, ക്ലോറോഫോം
തുടങ്ങിയ ശാസ്ത്രലേഖനങ്ങളും 'സംവാദനം' എന്ന ആദ്യത്തെ ഗ്രന്ഥ
നിരൂപണവും പുറത്തുവന്നത് ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിലൂടെയാണ്. കൂടാതെ
പത്രമാസികകളുടെ തുടക്കം എന്നോണം ലക്കം, നമ്പർ, വിഷയ
വിവരം തുടങ്ങിയ വിവരങ്ങൾ നൽകാൻ തുടങ്ങിയതും ഈ മാസിക
യായിരുന്നു.

പക്ഷതയാർന്ന ഒരു ഗദ്യശൈലിയും സംസ്കൃതപദപ്രചുരവും
ആധുനികമലയാളശൈലിയുടെ വികാസവും ജ്ഞാനനിക്ഷേപത്തിലൂടെ
യാണ് വളർന്നത്. വാർത്തകൾക്ക് പ്രാധാന്യം നൽകിക്കൊണ്ട് പുറത്തിറ
ക്കിയ ആദ്യത്തെ വർത്തമാനപത്രമെന്ന പദവിയും ജ്ഞാനനിക്ഷേപ
ത്തിന് നൽകാവുന്നതാണ്.

പശ്ചിമതാരക

1864ൽ പോൾമെൽവിൻ വാക്കർ സായ്പ്, കുര്യൻ റൈട്ടർ, ഇട്ടേര
റൈട്ടർ, ഇട്ടുപ്പ് റൈട്ടർ എന്നിവരുടെ നേതൃത്വത്തിൽ പുറത്തിറങ്ങിയ
'വെസ്റ്റേൺസ്റ്റാൻഡിംഗ്'ന്റെ മലയാള പതിപ്പാണ് 'പശ്ചിമതാരക'. മതപ്രചരണ
ത്തേക്കുള്ള ഹിന്ദു സാഹിത്യലേഖനങ്ങൾക്കും ഗ്രന്ഥവിമർശനങ്ങൾക്കും
പശ്ചിമതാരക പ്രത്യേകപ്രാധാന്യം നൽകിയിരുന്നു. ഉമ്മൻ ഫിലിപ്പോ
സിന്റെ 'അമരകോശപ്രദീപിക' തുടങ്ങിയ കൃതികൾ ഖണ്ഡശഃ പ്രസി
ദ്ധീകരിച്ചതും ഷേക്സ്പിയറിന്റെ 'കോമഡി ഓഫ് എറോൾസ്' എന്ന
നാടകത്തിന്റെ പരിഭാഷയായ 'ആൾമാറാട്ടം' പ്രസിദ്ധീകരിച്ചതും പശ്ചിമ
താരകയിലാണ്.

കേരളീയ നവോത്ഥാനം
സാഹിത്യത്തിലും സാമൂഹികനീക്കത്തിലും

സാഹിത്യമാസികകളും നവോത്ഥാനവും

മലയാളത്തിലെ ആദ്യകാലമാസികകളിൽ കൂടുതലും സാഹിത്യ പ്രചരണത്തേക്കാൾ മതപ്രചാരണമായിരുന്നു ലക്ഷ്യം വെച്ചിരുന്നത്. എന്നാൽ 19-ാം നൂറ്റാണ്ടോടുകൂടി സാഹിത്യപ്രധാനികളായ മാസികകൾ മലയാളത്തിൽ അച്ചടിച്ചു വരുവാൻ തുടങ്ങി. 20-ാം നൂറ്റാണ്ടായപ്പോഴേക്കും ഇത്തരം പ്രസിദ്ധീകരണങ്ങൾക്ക് മലയാള പത്രരംഗത്ത് സുപ്രധാനമായ സ്ഥാനം ലഭിച്ചു.

വിദ്യാവിലാസിനി

1881ൽ തിരുവനന്തപുരത്ത് പുറത്തുവന്ന വിദ്യാവിലാസിനിയാണ് കേരളത്തിലെ ഒന്നാമത്തെ സാഹിത്യ മാസിക. വിശാഖം തിരുന്നാൾ മഹാരാജാവി, ദിവാൻ രജസാമി, കേരളവർമ്മ വലിയകോയിതമ്പുരാൻ, പി. ഗോവിന്ദപിള്ള എന്നിവരുടെ പിന്തുണയോടെയാണ് ഈ മാസിക പുറത്തു വന്നത്. ഭാഷാചരിത്രം, ഭൂമിശാസ്ത്രം, കൃഷിശാസ്ത്രം, വിദ്യാഭ്യാസനിയമങ്ങൾ, യന്ത്രസംബന്ധമായ ശാസ്ത്രം, മൃഗചരിത്രം തുടങ്ങി ഒട്ടനവധി വിഷയങ്ങൾ പ്രസിദ്ധീകരിച്ച ഈ മാസിക ജനങ്ങളുടെ അറിവ് വർദ്ധിപ്പിക്കുന്നതിനുള്ള ഉപാധിയായിരുന്നു. കേരളവർമ്മയുടെ ശാക്തള വിവർത്തനം കേരളീയജനത കണ്ടതും (കേരളകാളിദാസൻ എന്ന പേരു വീണത് ഈ കൃതിയിലൂടെയാണ്), വിശാഖം തിരുന്നാൾ തയ്യാറാക്കിയ അലക്സാണ്ടർ, അരിസ്റ്റോട്ടിൽ, ആർക്കിമിഡീസ് തുടങ്ങിയ ഒട്ടനവധി മഹാനായരുടെ ഇംഗ്ലീഷിലുള്ള ജീവചരിത്രകുറിപ്പുകളുടെ പ്രകാശനവും മലയാള ചെറുകഥയുടെ പ്രഥമാങ്കുരമെന്ന് വിശേഷിപ്പിച്ച 'കല്ലൻ' എന്ന കഥയും വിദ്യാവിലാസിനിയിൽ അച്ചടിച്ചു വന്നതാണ്. ജാതി വ്യവസ്ഥ കൊടുമ്പിരി കൊണ്ടിരുന്ന കേരളത്തിലെ ജനങ്ങൾക്ക് സവർണ്ണ - അവർണ്ണ വ്യത്യാസമില്ലാതെ ഏതു എഴുത്തുകാരന്റേയും സാഹിത്യകൃതികൾ പ്രസിദ്ധീകരിക്കുവാനുള്ള ചങ്കുറ്റം കാണിച്ചത് വിദ്യാവിലാസിനിയാണ്.

വിദ്യാവിനോദിനി

1887-ൽ തൃശ്ശൂരിൽ നിന്ന് സി.പി.അച്യുതമേനോന്റെ നേതൃത്വത്തിൽ പുറത്തുവന്ന സാഹിത്യമാസികയാണ് വിദ്യാവിനോദിനി. സാഹിത്യം, ശാസ്ത്രം, ചരിത്രം തുടങ്ങിയ വിവിധ വിഷയങ്ങളെക്കുറിച്ചുള്ള പ്രബന്ധങ്ങൾക്കും അച്യുതമേനോൻ വിദ്യാവിനോദിനിയിൽ സ്ഥലം നൽകിയിരുന്നു. ഭാഷയെ സംസ്കൃതാധിപത്യത്തിൽ നിന്ന് മോചിപ്പിക്കുന്നതിനും നിഷ്പക്ഷമായ നിരൂപണം മുന്നോട്ടു കൊണ്ടുവരുന്നതിനും വേണ്ടി വിദ്യാവിനോദിനി തുടക്കം കുറിച്ചു. സംസ്കൃതജ്ഞാനമില്ലാതിരുന്ന ജനങ്ങൾക്ക് അറിയുവാനായി നായികാദിലക്ഷണം, നായകലക്ഷണം, ശൃംഗാരരസം തുടങ്ങിയ ശീർഷകങ്ങളിൽ പല ഉപന്യാസങ്ങൾ അദ്ദേഹം തയ്യാറാക്കി. കൂടാതെ കുണ്ടൂരിന്റെ 'മാളവികാഗ്നിമിതം'

പുറത്തിരുന്ന് തന്മൂലം 'ലക്ഷണോസംഗം', 'വിപ്രകോശവൃശീയം', 'സുന്ദരസരസീവരം', തുടങ്ങിയ ആദ്യകാലത്തെ നാടകങ്ങളിലെ പുത്തൻ രചനാശൈലികളെ ജനസമക്ഷം കാണിച്ചുവെക്കുകയും വിദ്യാവിനോദിനിയായിരുന്നു. ഏ.ആർ.ന്റെ 'ഭാഷാപ്രാബല്യം', 'മലയാളീകരണം' എൻ. രാമകൃഷ്ണന്റെ 'ചരിത്രം', 'കേസരി' എന്ന നർമ്മ പ്രധാനമായ ലേഖനങ്ങളുടെ സമാഹാരവും വിദ്യാവിനോദിനിയെ മാത്രമല്ല മലയാളസാഹിത്യത്തെയുമാണ് സമ്പന്നമാക്കിയത്. "വിദ്യാവിനോദിനിക്കുശേഷം ഇവിടെ നൂറു കണക്കിനു മാസികകൾ ഉദയം ചെയ്തു; അസ്തമിച്ചു. എന്നാൽ കൈരളിക്ക് ഒരിക്കലും മറക്കാൻ കഴിയാത്ത കരുത്തുറ്റ സംഭാവനകൾ-വിശേഷിച്ചും ഗദ്യസാഹിത്യത്തിന്-നൽകിയിട്ട് മൺമറഞ്ഞ വിദ്യാവിനോദിനി നിത്യസ്മരണീയമായിരിക്കും."

കവനോദയം

1896-ൽ കടത്തനാട്ട് ഉദയവർമ്മ തമ്പുരാൻ പുറത്തിറക്കിയ സാഹിത്യമാസികയാണ് 'കവനോദയം'. 'ഭാരതംചമ്പു', 'രാമായണംചമ്പു', 'ചന്ദ്രോത്സവം', 'ഭൃംഗസന്ദേശം', 'ഭാഷാകർണാമൃതം' മുതലായ സാഹിത്യശാഖയുടെ മുതൽകൂട്ടായ കൃതികളും കൃഷ്ണഗാഥയുടെ കർത്താവ് എന്ന നിലയിൽ പലതരം നവീന അഭിപ്രായങ്ങളും മൂലം കൊണ്ടത് കവനോദയത്തിലൂടെയായിരുന്നു. ഉദയവർമ്മ തമ്പുരാന്റെ വിവർത്തന കൃതികളായ രത്നാവലി, പ്രിയദർശിനി, ഗവേഷണപരമായ 'കവികലാപം' എന്ന ലേഖന പരമ്പര തുടങ്ങിയതും കവനോദയത്തിൽ വെച്ച് ആയിരുന്നു. 16 കൊല്ലത്തോളമാണ് ഈ മാസിക പ്രസിദ്ധീകരിച്ചത്.

ഭാഷാപോഷിണി

കണ്ടത്തിൽ വർഗ്ഗീസ് മാപ്പിളയുടെ പുത്രാധിപത്യത്തിൽ പുറത്തുവന്ന പതൂർമാസികയാണ് ഭാഷാപോഷിണി (1892). പദ്യശാഖയേക്കാൾ ഗദ്യശാഖയ്ക്കാണ് ഈ മാസിക പ്രാധാന്യം കല്പിച്ചത്. മലയാളമനോരമയുടെ ഓഫീസിൽ സാഹിത്യകാരന്മാർ യോഗം ചേർന്ന 'കവിസമാജ'മാണ് ഭാഷാപോഷിണിയുടെ ഉത്ഭവത്തിന് കാരണമായത്.

മൂന്നു പ്രവിശ്യകളായിരുന്ന കേരളത്തിന്റെ സംസ്കാരത്തെക്കുറിച്ചും വൈജ്ഞാനികമേഖലകളെക്കുറിച്ചും ഭാഷയുടെയും സാഹിത്യത്തിന്റെയും വളർച്ചയെക്കുറിച്ചുമുള്ള പലതരം പ്രസിദ്ധീകരണങ്ങൾക്ക് ഭാഷാപോഷിണി സഹായകമായി സാഹിത്യം, ഭാഷാശാസ്ത്രം, ചരിത്രം, വിദ്യാഭ്യാസം, ശാസ്ത്രസാങ്കേതികവിജ്ഞാനീയങ്ങൾ, ജീവചരിത്രങ്ങൾ തുടങ്ങിയ വിവിധ വിഷയങ്ങളിലുള്ള പ്രബന്ധങ്ങൾ ഭാഷാപോഷിണി

കേരളീയ തത്വചിന്താസാഹിത്യത്തിലും സാമൂഹികനീർമ്മിതിയിലും

പ്രസിദ്ധീകരിച്ചിട്ടുണ്ട്. 'കേരളപ്രാണിനിയ'ത്തെ കുറിച്ചുള്ള ദശകൃതിയിൽ പ്രസ്തുത വിഷയത്തെക്കുറിച്ചുള്ള വിശദമായ ലേഖനപരമ്പരകൾ മലയാളികൾക്ക് ഭാഷാവിദ്യാകരണത്തെ കുറിച്ച് ഒരു ധാരണ ലഭിക്കുവാൻ സഹായകമായി. ഉള്ളൂർ എസ്. പരമേശ്വരയ്യരുടെ 'നമ്മുടെ ഗദ്യമെഴുത്തുകൾ' എന്ന ലേഖനത്തിൽ മലയാളത്തിലെ ഗദ്യരചയിതാക്കളെ ആംഗലേയസാഹിത്യകാരന്മാരോട് താരതമ്യപ്പെടുത്തിയപ്പോൾ യൂറോപ്യൻ സാഹിത്യജനങ്ങളിലേക്ക് എത്തിക്കുവാനുള്ള വഴിയാണ് തുറന്നിട്ടത്. (ഏ.ആർ.എ.മേഴ്സൺ, സി.വി.രാമൻപിള്ള-വാൾട്ടർ സ്കോട്ട്, സി.പി.അച്യുതമേനോൻ-മെക്കാളെ മുതലായവർ) ആശാന്റെ 'സിംഹപ്രസവം' എന്ന കവിത, മുർക്കോത്ത് കുമാരന്റെ 'അന്യഥാ ചിന്തിതം കാര്യം ദൈവമന്യുത ചിന്തയേത്' (മലയാളത്തിലെ ആദ്യത്തെ ലക്ഷണമൊത്ത ചെറുകഥ) എന്ന നോവലുകളും, ഷേക്സ്പിയറിന്റെ 'മാക്ബത്ത്', 'ട്രാജഡി' 'ബാലാഭം' തുടങ്ങിയ നാടകവിവർത്തനങ്ങളും ഈ മാസികയുടെ മുതൽകൂട്ടുകളിൽ ചിലതാണ്. സാഹിത്യത്തിന്റെ മേഖലകൾ ഇന്നും തുറന്നുകാട്ടുന്ന മാസിക കൂടിയാണ് ഭാഷാപോഷിണി.

രസികരഞ്ജിനി

1903-ൽ അപ്പൻ തമ്പുരാന്റെ നേതൃത്വത്തിൽ തൃശ്ശൂരിൽ നിന്ന് പ്രസിദ്ധീകരണമാരംഭിച്ച മാസികയാണ് 'രസികരഞ്ജിനി'. രാജ്യഭരണവിഷയങ്ങൾ തീർത്തും ഒഴിവാക്കി കൊണ്ട് സാഹിത്യത്തിനും ശാസ്ത്രത്തിനും പ്രാധാന്യം നൽകി പ്രസിദ്ധീകരിച്ച മാസിക കൂടിയാണിത്. മലയാളത്തിലെ ആദ്യ ഡിറ്റക്ടീവ് നോവലായ അപ്പൻ തമ്പുരാന്റെ 'ഭാസ്കരമേനോൻ', മർക്കോത്ത് കുമാരന്റെ 'കാകൻ' എന്ന കഥ, സി.എസ്. സുബ്രഹ്മണ്യൻ പോറ്റിയുടെ 'ഒരു വിലാപം' എന്ന വിലാപകാവ്യം, 'ഉണ്ണുനീലിസന്ദേശം', 'ലീലാതിലകം' തുടങ്ങിയ പ്രശസ്ത കൃതികളും സഹ്യദയസമക്ഷം എത്തിച്ചത് രസികരഞ്ജിനിയിലൂടെയായിരുന്നു.

കവനകൗമുദി

"പൂർണ്ണമായും കവിതാമയമായി പ്രസിദ്ധീകരിക്കപ്പെട്ട ഭാരതത്തിലെ ഏക ആനുകാലിക പ്രസിദ്ധീകരണമാണ് കവനകൗമുദി." പന്ത്രണ്ടു കേരള വർമ്മയുടെ പത്രാധിപത്യത്തിലായിരുന്നു ഈ മാസിക പുറത്തു വന്നത്. പ്രാദേശിക വാർത്തകൾ, പുസ്തകങ്ങൾ കൈപ്പറ്റിയ വിവരം, പരസ്യങ്ങൾ, മുഖപ്രസംഗങ്ങൾ തുടങ്ങിയ എല്ലാ ഇനങ്ങളും പദ്യത്തിൽ തന്നെയാണ് ചേർത്തിരിക്കുന്നത്. വള്ളത്തോളിന്റേയും, ഉള്ളൂരിന്റേയും ജീവ്യരേയും ഒട്ടനവധി കൃതികൾ പ്രസിദ്ധീകരിക്കപ്പെട്ട മാസിക എന്ന ഖ്യാതിയും കവനകൗമുദിക്ക് അവകാശപ്പെടാം.

"മലയാളത്തിൽ പദ്യരചനാപാടവത്തിന്റെ അഭിവൃദ്ധി അറിയാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നവർ ഇതിനെ മാനദണ്ഡമായി എടുത്തുനോക്കുന്നതിൽ

അമ്പലമില്ല എന്ന് വിവേകോദയത്തിൽ കൂമാരനാശാനും പറഞ്ഞു വെക്കുന്നുണ്ട്. 'സ്വദേശാഭിമാനി', 'കേസരി', 'വിവേകോദയം', 'ഗ്രന്ഥാലോകം', 'ശ്രീമതി' തുടങ്ങിയ മാസികകളും ലോകം നിഷേധിക്കപ്പെട്ട ഒരു ജനതയ്ക്ക് മുമ്പിൽ അറിവിന്റെ വാതായനങ്ങൾ തുറന്നു. സാഹിത്യത്തിന്റെ പദ്യഗദ്യമേഖലയ്ക്ക് പുത്തൻ പ്രവണതകൾ സമ്മാനിക്കുകയും അന്ധവിശ്വാസങ്ങളെ നിർമ്മാർജ്ജനം ചെയ്യുകയും ശാസ്ത്രസാങ്കേതിക മേഖലകൾ ജനങ്ങൾക്ക് പരിചയപ്പെടുത്തുകയും ചെയ്ത ഈ മാസികകളെല്ലാം തന്നെ മലയാള സാഹിത്യശാഖയുടെ പുത്തൻ താരോദയത്തിന് വഴി വെട്ടി തെളിക്കുകയാണ് ഉണ്ടായത്. ഇന്നും ജനങ്ങൾക്കിടയിലുള്ള അന്ധവിശ്വാസങ്ങളെയും ഉച്ചനീചത്വങ്ങളെയും സാഹിത്യത്തിലെ പുതിയ താരോദയങ്ങളെയും പരിചയപ്പെടുത്തുന്നതിനുള്ള ഒരു ഉപാധിയായി മാസികകൾ മാറേണ്ട കാലം അതിക്രമിച്ചിരിക്കുന്നു.

പുതിയ കാലത്തേക്കുള്ള ഭാഷയുടെ വളർച്ചയിൽ ഇത്തരം സാഹിത്യ മാസികകൾ വഹിച്ച പങ്കാണ് പിൽക്കാലത്ത് പുരോഗമനാശയങ്ങളുടെയും നവോത്ഥാനചിന്തകളുടെയും കാതലായി വർത്തിച്ചത്.

അസിസ്റ്റന്റ് പ്രൊഫസർ (Govt. Guest)
മലയാളവിഭാഗം
കാർമ്മൽ കോളേജ്, മാള

സഹായകഗ്രന്ഥങ്ങൾ

1. അച്യുതൻ. എം (പ്രൊഫ:), സ്വാതന്ത്ര്യസമരവും മലയാളസാഹിത്യവും, കറന്റ് ബുക്സ് തൃശ്ശൂർ, 1994.
2. കണ്ടത്തിൽ വർഗ്ഗീസ് മാപ്പിളയുടെ കൃതികൾ (ഒന്നാം വാല്യം) മനോമ പബ്ലിഷിംഗ് ഹൗസ് (സമ്പാ:), 1977
3. ചുമ്മാർ ടി.എം, ഭാഷാഗദ്യസാഹിത്യചരിത്രം, നാഷണൽ ബുക് സ്റ്റാൾ, 1979
4. ചെറിയാൻ കുനിയത്തോടത്ത് (ഡോ.), മലയാളഭാഷയും ഡോ. ഹെർമ്മൻ ഗുണ്ടർട്ടും, പി.കെ.ബ്രദേർസ്, കോഴിക്കോട്, 1997

ഭാവനയുടെ അരികും അതിരും



വിവിധലോകഭാഷകളിലെ സാഹിത്യകൃതികളെ ആഴത്തിൽ സ്വാധീനിച്ച പ്രസ്ഥാനമാണ് കാല്പനികത. ഭാവന, ഭാഷാശൈലി, പ്രമേയം, ജീവിതസമീപനം എന്നീ കാര്യങ്ങളിലെല്ലാം സാമ്പ്രദായിക വഴികളിൽ നിന്നു മാറിനടന്ന കാല്പനികതയെ തലമുറകളുടെ കാഴ്ചപ്പാടിലൂടെ അവതരിപ്പിക്കുന്ന പഠനങ്ങളുടെ ശേഖരം



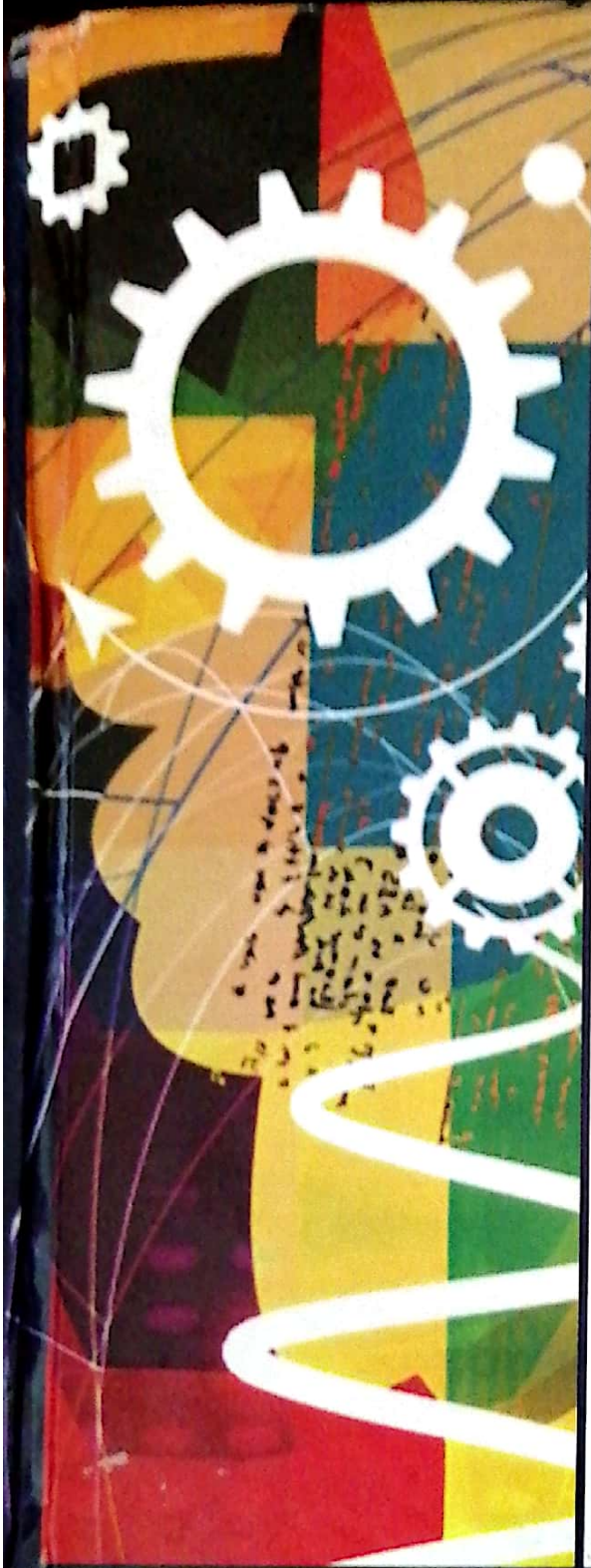
Publishers:

Department of Malayalam

Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady

Regional Centre, Payyanur,

Edat P.O., Kannur Dt., Pin:670327.



Academic
Deliberations on
**Words,
Visuals
and
Beyond**

**Mediatization of
Narrative Spaces**



Dr. Mini M Abraham
Dr. Gayathri P. J

ACADEMIC DELIBERATIONS
ON
WORDS, VISUALS AND BEYOND:
MEDIATIZATION OF
NARRATIVE SPACES

Edited by:

Dr. Mini M. Abraham
Dr. Gayathri P.J.

Sub Editors:

Dr. Laly Mathew
Mr. Jojoy K.V.
Ms. Merin Jose
Ms. Mincy Mathew
Ms. Anju Maria

Ms. Lissy Kachappilly
Ms. Sabitha Zacharias
Ms. Smitha Elizabeth George
Ms. Reshma K.P.
Ms. Nasnin S.



PRATHAM PUBLICATIONS

New Delhi

**Academic Deliberations on Words, Visuals and Beyond:
Mediatization of Narrative Spaces**

© Author

Edition 2019

ISBN : 978-93-88742-12-2

Published by :

Pratham Publications

4228/1, Ansari Road

Darya Ganj,

New Delhi - 110 002

Ph.: 011-23266109.

Fax : 91-011-23283267

e-mail: prathampublications30@gmail.com

Typesetting by :

Sanya Computers

(Mob: 9810458150)

Delhi - 110053

Printed and Bound in India

Contents

<i>Preface</i>	(v)
<i>Acknowledgements</i>	(vii)

SECTION-I

MEDIATIZATION

1. Mediatization of Culture and the Transformation of Individualism 3
—*Stig Hjarvard*
2. Xenotransplantation, Form-of-life and Post human Lives 5
—*Pramod K. Nayar*
3. From Mediatization to Mythification: The Course of Icons in the Making 18
—*Arya M.P.*
4. Mediatization of Narrative Spaces in M.T. Vasudevan Nair's *The Soul of Darkness* 24
—*Febi Abraham*
5. Exposed: Mediatization and the Realm of the Private 30
—*Nivedhitha S.*
6. From Reel to Real: Cinema Fictionalised in Shashi Tharoor's *Show Business* 36
—*Prashant V.G.*
7. Mimetic Blurring of Cultural and Aesthetic Spaces 42
—*Smitha Elizabeth George*

SECTION-II

NEW MEDIA AND CULTURE

8. Digital Story worlds and Beyond: Analyzing the Unnatural Immersive Reading Experience in Digital Fictions 49
—*Anu K. Sam*

32. A Foray into the Interactive Space of New Generation
Visual Narrative: The Video Games 207
—*Neena Simon*
33. Visibility and Surveillance: A Study of Ruth Ozeki's *A Tale
for the Time Being* 215
—*Ms. Pretty John P.*
34. Images of Mourning: Combating Trauma through the
Narrative Space of Photography 224
—*Shobha S. Nair*
35. Adapting Novels into Graphic Novels: Reading the Gaps in
Knight of Darkness 231
—*Vidhu Mary John*
36. Cartoons: Visual Narratives that Sculpture Young Minds 238
—*Vidhya Viswanathan*

SECTION-VI

MEDIA IDENTITY AND NARRATIVE SPACES

37. Brands as Narratives: Identity Constructs generated by
Brands 247
—*C.S. Prabha*
38. *The Museum of Innocence* and *The Innocence of Objects*:
Orhan Pamuk's Polemics of Words, Objects and History 255
—*Dr. Jeena Ann Joseph*
39. Garhwal in Memes: Connecting with the Everyday through
a New Narrative Space 264
—*Kritika Kshettrie; —Dr. Rahul Narayan Kamble*
40. Narrating the Nation through Biographical Comics: An
Analysis of Amar Chitra Katha's *Mahatma Gandhi*:
Father of the Nation 271
—*Preeti Kumar*
41. Reinterpreting Turkish History through Monumental Space:
A Study of Orhan Pamuk's *Silent House* 279
—*Dr. K.M. Shamla*
42. Digital Chronotopes: Individual, Shared, and Public 285
—*Princy K.P.*
43. Media Consciousness: Role of Education in the 21st
Century 293
—*Vinu C. James*

33

Visibility and Surveillance: A Study on Ruth Ozeki's *A Tale for the Time Being*

—Ms. Pretty John P.

Carmel College, Mala

The Internet has become part and parcel of human life, for it offers WWW, e-commerce, entertainments, personal interactions through IMing, emailing, social networking, and so on. It is also largely based on: "... the unique ability of the Internet to converge textual and visual media in both real and chosen time and at relatively low cost" (Wall, 2007: 105). Through New Media, people convey their personal opinions, share files, photos and videos of anything globally.

Ruth Ozeki's *A Tale for the Time Being* (2013) depicts the predicament of a depressed teenaged girl Nao, who wants to write a memoir on her 104-year-old great-grandmother, a Zen nun and feminist novelist, as her extended suicide note. Ozeki successfully renders the twin protagonists' — Nao and Ruth — divided cultural loyalties, sense of alienation and degradation, and the development of autonomous female identity in her novel. The Internet functions as a character in the novel, as a kind of temporal gyre. As the information is no longer written down in physical form, Ozeki questions how stable are our information in the digital world. The present study provides insights into how the New Media world of visibility, constant surveillance and instantaneous availability of digital information with frequent looping of the media content can wreak havoc on the lives of laymen in Ozeki's *A Tale for the Time Being*.

The great earthquake and tsunami in Japan on 11 March, 2011 followed by the Fukushima Nuclear Meltdown are traumatic experiences for the Japanese since the Second World War. Because of the cyber revolution, their trauma has become a global catastrophe: "There is probably no other disaster which has received as much

documentation" (Slater, 2015: 25). The tsunami and Fukushima Nuclear Meltdown accounts were disseminated through New Media. In *A Tale for the Time Being*, Ruth describes the role played by the Internet in sharing the information related to these disasters globally: "In the two weeks following the earthquake ... the global bandwidth was flooded with images and reports from Japan, and for that brief period of time, we were all experts on radiation exposure and microsieverts and plate tectonics and subduction. But then the uprising in Libya and the tornado in Joplin superseded the quake, and the keyword cloud shifted to *revolution* and *drought* and *unstable air masses* as the tide of information from Japan receded" (113). When new events take place, the older ones will be forgotten in the digital culture. Ozeki's words give a new dimension to the significance of New Media in disseminating the news related to the havoc wrought by these disasters:

The tidal wave, observed, collapses into tiny particles, each one containing a story:

- A mobile phone, ringing deep inside a mountain of sludge and debris;
- A ring of soldiers, bowing to a body they've flagged;
- A medical worker clad in full radiation hazmat, wanting a bare-faced baby who is squirming in his mother's arms;
- A line of toddlers, waiting quietly for their turn to be tested.

These images, a minuscule few representing the inconceivable many.... (114) Just like the gyre, the Internet connects and isolates people simultaneously. Not getting a response from her American friend to her repeated emails, Nao observes: "There's nothing sadder than cyberspace when you're floating around out there, all alone, talking to yourself" (125). In the whirlpool of life, people are instantly lost and forgotten in the Internet.

Like the ocean gyres collecting pollutants, the Internet too, collects debris. But it's not physical, but digital in the cyberspace. Nao is both fascinated and repelled by the cyberspace. She experiences the fantasy of disembodiment in cyberspace by spending her time on her blog, "The Future is Nao." She escapes the confines of her bio-body to the uploaded consciousness of the cyber world, to her dreams of disembodiment. She feels that the Internet will give her new freedom in the cyber world which is forbidden in the real world. She thus, becomes part of the mediatization of the global world. Through her blog, she constructs a persona for the public consumption and response

and it represents her escape from *ijime* or torture by her classmates and teacher. She regards cyberspace as her room of her own. In order to enjoy the unlimited freedom offered by the blog, she reduces herself to a hyperlinked self among numerous such selves/blogs. She has been under the impression that her blog will secure many readers and dreams to create an online community through the sharing of her private space. Instead of telling about her *ijime*, she conveys a very false impression of her life in Japan. She gives an alternative digital narrative to her American friend Kayla. Her blog, at first, signifies her disembodiment in cyberspace, for she has been satisfied with her digital identity. Unfortunately, her blog turned out to be a big flop. The Zen Buddhist meditation known as Zazen seems to be her temporary relief from the media conglomerates. As her website has been under surveillance, bullies phish her account. It becomes a threat to her own existence because they upload defamatory messages and video clips in her website. Thus, hacking results in her increased visibility, invasion of her privacy and her exploitation in the technological consumption of her body.

Ozeki succinctly outlines the relationship between cyber consumer society and pornography and how the Internet becomes a medium of distribution and consumption of pornography in her novel. In *Cybercrime*, David Wall classifies cybercrime into cyber-trespass, cyber-deceptions and thefts, cyber-porn and cyber-violence (2001: 3-7). Identity theft using spyware is not rare now. Nancy Willard defines "impersonation" in her *Cyberbullying and Cyberthreats* as a form of cyber-bullying where a "cyberbully gain(s) access to the target's account on a system and pose(s) as the target" to "post material that reflects badly on the target or interferes with the target's friendships" (2007: 08). In this regard, she also describes "outing" as "publicly posting, sending, or forwarding personal communications or images that contain intimate personal information or are potentially embarrassing" (2007: 09). Cyberspace has opened new windows of harassment to adolescent bullies. Adolescent cyber bullying has become very rampant and often threatening these days. Bullies can become aggressive anonymously and its reach is an extensive and infinite audience. The permanence of expression and instantaneous popularity of the Internet too attract the bullies. In *A Tale for the Time Being*, Nao's classmates cyber-trespass her account by hacking, impersonate her, post a video of her funeral service in the class in her absence.

Cyber culture creates and promotes massive new markets for pornographic videos. In order to get videos, the bullies may use different

tactics like happy slapping, hopping, video jacking or You Tube bullying, and so on. Quoting John Carr on the Internet safety, Nick Hunter describes “happy slapping” as a form of cyber bullying in his *Cyber Bullying*:

Being hit in public space, which is what historically bullying has been about, is ... humiliating enough, but in general it was limited to just the small number of people who would be standing around at the time it happened ... What's far, far worse is the way that (happy slapping attack victims') humiliation is being multiplied and advertised and broadcast to people they (the victim), know and people they don't know. (2012: 20)

The phrase “happy slapping” evokes fun. Unhappily, it is not at all fun for the victim: “... one person physically attacks someone, while another person records the attack, often with a mobile phone camera. The video of the incident is then posted online or sent from phone to phone for others to watch” (2012: 20). Hopping is a variant of happy slapping. It includes: “... direct assaults, is showing up with increasing frequency in the United States and elsewhere” (Kohler, 2007, Qtd. in Kowalski et al., 2012: 68). The victim could be known /unknown to the perpetrator. The New Media have made performance crimes popular. In *A Tale for the Time Being*, Ozeki underlines that the advent of New Media has enhanced the adolescents' performance crimes. Not satisfied with Nao's funeral service video in the cyberspace, her classmates “happy slap,” or rather “hop” her to make a heterosexual/ homosexual rape video on her. They videotape her in a vulnerable situation and upload it to a video sharing site without her knowledge as it happens in video jacking or YouTube bullying. But the cyber bullies make them appear that they have come from the victim. The quick spread of unsubstantiated information as authentic evidence through social media aggravates the situation. As the on-demand aspect of the media content is determined by the consumer and not the producer, Nao's porn video's looping posits indescribable menaces to her. Thus, it emphasizes the silent prey-violent predator relationship in the cyberspace.

Pornography plays a key role in the e-society. In this regard, Immanuel Kant's views on sexuality and objectification need to be mentioned: “... as soon as that appetite has been stilled, the person is cast aside as one casts away a lemon which has been sucked dry ... as soon as a person becomes an Object of appetite for another, all motives of moral relationship cease to function, ... and can be treated and used as such by everyone” (1963: 163). Kant compares the objectified

individual to a lemon, used and thrown afterwards. Andrea Dworkin describes sexual objectification on Kantian terms: "Objectification occurs when a human being, through social means, is made less than human, turned into a thing or commodity, bought and sold" (Cornell, 2000: 30-1). Pornography encourages rape and sexual violence against women. Robin Morgan observes: "Pornography is the theory and rape is the practice" (1980: 139). Even if all women are not the victims of actual rape, they are victims of the threat of rape. Though all men are not perpetrators of rape themselves, they are benefiting from it. Pornography cultivates sexual aberration and fuels men's sexual fantasies. Catherine Mac Kinnon defines pornography:

...the graphic sexually explicit subordination of women through pictures or words that also includes women dehumanized as sexual objects, things, or commodities; enjoying pain or humiliation or rape; being tied up, cut up, mutilated, bruised or physically hurt; in postures of sexual submission or servility or display; reduced to body parts; penetrated by objects or animals or presented in scenarios of degradation, injury, torture; shown as filthy or inferior; bleeding, bruised, or hurt in a context that makes these conditions sexual." (Mac Kinnon, 1987, 176)

Mac Kinnon states that such depictions of women seriously endanger them: "In pornography women exist to the *end* of male pleasure" (Mac Kinnon, 1987: 173). What is problematic here is sexuality as constructed through pornography. The use of pornography constitutes a real sex act. There is "sex between people and things, human beings and pieces of paper, real men and unreal women" (Mac Kinnon, 1993: 109). Men have real sex acts with pornographic images, may be in the form of pieces of paper, treated as real women. The purpose of men's sexual gratification is achieved whether its real sex acts between real men and real women or between real men and unreal women in the form of pornographic images. Laura Mulvey argues that women are objects of the male gaze and functions as erotic object in cinemas: "... builds the way she is to be looked at into the spectacle itself" (1988: 67). Woman on the screen is a mere spectacle and object on display, as embodying "to-be-looked-at-ness." Martha Nussbaum states that there are six other types of objectification besides instrumentality as proposed by Kant, Dworkin and Mac Kinnon. The seven notions of objectification are instrumentality, denial of autonomy, inertness, fungibility, violability, ownership and denial of subjectivity (1995: 257). Nussbaum argues that instrumentalisation leads to other forms of objectification and it is context which determines objectification. Rae Langton declares that pornography of a certain

kind silences and subordinates women and she adds three more aspects to Nussbaum's seven types of objectification: reduction to body, reduction to appearance and silencing (2009: 228-9). Using J.L Austin's Speech Act Theory, Langton argues that pornographic speech subordinates and silences women.

In *A Tale for the Time Being*, Nao is a victim of rape pornography, to be more precise, a target of "menstrual" or "red rhapsody" pornography. Such porn features sexual events involving women who are menstruating with a focus on the menstrual blood. Here, the victim Nao is under the age of 18, so, it is child pornography. Nao's case is also an instance of child-on-child sexual abuse, for she is subjected to rape and exploitation by her own classmates. The perpetrators record, share and upload the videos of her sexual assault to public online spaces and see to that they have used voting or rating websites. Her videoporn finds market in the virtually untraceable dark web. The cyber consumer can instigate a virtual relationship with the content of her porn video. Her bloody panties are put on auction in a *burusera* online shop for the panty fetishists to buy it. *Burusera* is a Japanese word for the fetishism towards the used girl/ young woman's uniform or undergarments. The fetishists hide behind the anonymous web identities: "To gaze implies more than to look at—it signifies a psychological relationship of power, in which the gazer is superior to the object of the gaze" (Schroeder 1998: 21). Nao becomes a sexual victim to the voyeuristic gaze of others.

Nao's bullying—real/virtual—from her classmates results in her depression, suicide tendency, loss of self-esteem, poor performance at school, disinterestedness in day-to-day activities and withdrawal from her parents. Like many other porn victims, the cyber world offers Nao, a gateway to the sex trade industry. She stops going to school after the Panty incident and finds herself dating with the customers of one of the disreputable Akhibara French Maid Cafés. Her first customer Ryu, an affluent school uniform fetish, exchanges his clothes for her uniform. But, Nao's second and last customer takes her as a customary French maid demanding subservient attitude from her. The French maid uniform connotes the dominance-submission aspect in the sexual role playing expected from the master-slave relationship in certain BDSM groups. In the digital world, where everything is instantaneous, she becomes a commodity for the online market with high level demand for sexually explicit materials.

The major characters in the novel, in one way or the other, make use of New Media. Nao's father Harry Yasutani alias Haruki 2, a computer scientist at a large IT Company in Silicon Valley is

headhunted to work on human-computer interface design and is fired from his company when he refuses to make human-computer interface design for the US military as weapon controllers for soldiers to use. After the dot-com bubble burst or the Internet boom, he becomes a pauper and takes his family to Japan. He becomes a suicide maniac and chats with similar people in different suicide websites. He always searched for the image of the Falling Man after the 9/11 World Trade Centre attack in the Internet and becomes obsessed with it. Out of his love for his daughter, he too bids for Nao's panties in the online auction organized by the fetish website in the guise of C. Emperor but loses himself to the pervert nicknamed Lolicom 73. In the alternative ending of the novel, he creates a computer programme that can erase the history of Nao from the Internet. The second protagonist Ruth too ransacks the Internet to find the viral video on "The Tragic and Untimely Death of Transfer Student Nao Yasutani" based on Nao's funeral service observed by her classmates and teacher Ugawa Sensei in her absence as part of their bullying. Ruth also googles Jiko Yasutani, the I-feminist novelist and great grandmother of Nao. She accidentally comes across with Haruki 2's email on suicide to Professor Leistiko and emails to him to know Nao's family's whereabouts. Ruth's husband too discovers a researcher namely H. Yasudani in the Internet. Even the 104-year-old Jiko too is tech-savvy, for she frequently texts Nao to clear her doubts. It is Muji's texting regarding Jiko's sinking stage that finally saves Nao from going for more dates.

As the information in the Internet is no longer written down in physical form, Ruth casts doubt on the stability of the information in the digital world: "Does the half-life information correlate with the decay of our attention? Is the Internet a kind of temporal gyre, sucking up stories, like geo-drift, into its orbit? What is its gyre memory? How do we measure the half-life of its drift?" (114). Ruth has spent days on the Internet to know what has become of Nao and her family: "She'd spent the afternoon watching clips of bullying and harassment on YouTube and other video-sharing sites in both the United States and Japan, but the clip she was looking for, "The Tragic and Untimely Death of Transfer Student Nao Yasutani," which according to Nao had once gone viral, was nowhere to be found" (115). She feels that the Internet, the "temporal gyre," has "sucked up" Nao's story just like everything else: "Vanished! ... It's like the harder I look, the more stuff slips away" (230). She mistrusts the integrity and stability of the Internet which have become very crucial in the e-society.

In *A Tale for the Time Being*, Ozeki gives insights into the digital culture and how the New Media encourage both surveillance and

spectacle. The constant connection to the cyber world through New Media creates the platform for cyberbullying and facilitates sexual exploitation. The cyber bullies make the sexual victimization of Nao, which results in her digital record in the dark corners of the Web for the voyeuristic public to take pleasure in. Thus, in the hypermedia society, where the "otherness" or "object-status" of woman permeates through the cyber space, the Internet's anonymous aspect attracts the unscrupulous to do anything online.

REFERENCES

- Cornell, Drucilla. *The Imaginary Domain: Abortion, Pornography and Sexual Harassment*. Routledge, 1995.
- Dworkin, Andrea. "Against the Male Flood: Censorship, Pornography, and Equality." *Oxford Readings in Feminism: Feminism and Pornography*. Ed. Drucilla Cornell. Oxford U P, 2000: 19-44.
- Dworkin, Andrea. *Pornography: Men Possessing Women*. E. P. Dutton, 1989.
- Dworkin, Ronald. "Women and Pornography." *New York Review of Books*. 21 October 1993: 36.
- Hunter, Nick. *Cyber Bullying*. Raintree, 2012.
- Kant, Immanuel. *Lectures on Ethics*. Trans. Louis Infield. Harper and Row Publishers, 1963.
- Kowalski, Robin .M, Susan P. Limber et al. *Cyberbullying: Bullying in the Digital Age*. Wiley Blackwell, 2012.
- Langton, Rae. *Sexual Solipsism: Philosophical Essays on Pornography and Objectification*. Oxford University Press, 2009.
- MacKinnon, Catharine. *Feminism Unmodified*. Harvard U P, 1987.
- MacKinnon, Catharine. *Only Words*, Harvard U P. 1993.
- Morgan, Robin. "Theory and Practice: Pornography and Rape." *Take Back the Night: Women on Pornography*. Ed. Laura Lederer. William Morrow, 1980: 134-40.
- Mulvey, Laura. "Visual Pleasure and Narrative Cinema." *Feminism and Film Theory*. Ed. Constance Penley. Routledge, 1988: 57-68.
- Nussbaum, Martha C. "Objectification." *Philosophy and Public Affairs*. Fall 1995, Vol. 24, Issue 4: 249-91.
- Nussbaum, Martha C. *Creating Capabilities: The Human Development Approach*. Harvard U P, 2011.
- Ozeki, Ruth. *A Tale for the Time Being*. Canongate, 2013.
- Schroeder, J.E. "Consuming Representation: A Visual Approach."

Representing Consumers: Voices, Views and Visions. Ed. B.B Stern. Routledge, 1998: 193-230.

Slater, David. "Urgent Ethnography." *Japan Copes with Calamity.* 2nd Edition. Ed. Tom Gill et al. Peter Lang, 2015: 25-49.

Surette, Ray. *Media, Crime and Criminal Justice: Images, Realities and Policies.* 5th Edition. Cengage Learning, 2015.

Wall, David .S. *Cybercrime and Society.* Polity Press, 2007.

Wall, David .S. *Cybercrime: The Transformation of Crime in the Information Age.* Sage, 2001.

Willard, Nancy.E. (2007). *Cyberbullying and Cyberthreats: Responding to the Challenge of Online Social Aggression, Threats, and Distress.* Champaign, IL: Research Press.

Academic Deliberations on **Words, Visuals and Beyond** **Mediatization of Narrative Spaces**

Narratives, being a constructive and strategic act in all forms, whether print, digital, visual, or interactive, have been the drivers of human societies in all arenas like the social, political, educational and the personal, to the extent of shaping behaviours and events. The term 'Narrative Space' has now come to include novels, films, video games, online social media and real-life environments. However, media, the major generators of the narrative, is pervading and hijacking the narrative spaces. Mediatization is the process through which core elements of a cultural or social activity like language, politics or religion, assume media form. As a consequence, the activity is largely performed through interaction with a medium, and the structure of the social and cultural activities are influenced by media environments, which they gradually become more dependent upon. It tracks changes in practices, cultures, and institutions in media saturated societies, resulting in the transformation of these societies themselves. In essence, mediatization is about 'media logic', a transformation of society and its culture through media.

Dr. Mini M Abraham is an Assistant Professor in the Postgraduate Department of English, Bharata Mata College, Kochi, Kerala. She has been dealing with topics ranging from Linguistics, Indian Writing, Culture Studies, Literary Theory, Postcolonialism and ELT. Her doctoral research was a field study in Listening Skills in ELT. Other areas of interest include Future Studies and P.G. Wodehouse. She is a member of ELTAI and ELTIF.

Dr. Gayathri P. J is a guest faculty in the Postgraduate Department of English, Bharata Mata College, Kochi, Kerala. She has been dealing with topics ranging from Literary and Critical Theory, Indian Writing, Postcolonialism, Culture Studies and Gender Studies. Her doctoral research was in Gender Studies. Her other areas of interest include Disability Studies and Modern Indian English Plays. She is a member of 'Forum on Contemporary Theory.'



PRATHAM PUBLICATIONS

4228/1, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002 (INDIA)

Tele: +91-11-23266109, 23283267

Fax: +91-11-23283267

E-mail: prathampublications30@gmail.com

₹ 2295/-

ISBN: 978-93-88742-12-2



9 789388 742122